हिन्दी की एकमात्र हास्य-व्यंग-कार्टून-पैरोडी पत्रिका

दीवाना





चिल्ली लीला - 195



दीवानी चिपकी

काटिये चिपकाइये और मज़ा लीजिये

इस बस को हाईजैक करने वाला मरने के बाद सीधा स्वर्ग जायेगा

दीवाना

प्रेम पत्र



पूज्य चौधरी चरणसिंह जी,

सादर प्रणाम !

यूं तो मैं उस समय से आपके चाहने वालों में हूं जब आप उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे। परन्तु आपके पिछले दिनों के करतब देखकर मेरे मन में आपके लिये श्रद्धा और भी बढ़ गई है।

सुना जाता था कि सरदार पटेल जैसा कड़ा गृहमंत्री भारत में कोई नहीं हुआ। लेकिन उत्तर प्रदेश से आने वाले गोविन्द बल्लभ पंत व उमाशंकर दीक्षित आदि सबको कड़ी सख्ती करने में मात कर दिया है। आपने जिस जोश के साथ बंसीलाल से दाव-पेंच खेले उससे यह साबित होता है कि उसमें शायद आपके अफसरों का होश शामिल नहीं। जब आपने जनता के कन्धों पर जनता सरकार बनाई तो यह बात भी लाजिमी है कि आप उन वायदों को गृहमत्रालय की फाइल में बन्द करके भूल न जायें जिसके आधार पर आप सत्ता में आये।

मेरा सुझाव यह होगा कि जब आप शांति भूषण जी से बात करें तो उन्हें यह याद दिला दिया करें कि आप विधि मंत्रालय के मालिक हैं, अब कोई मामूली वकील नहीं रहे। इसलिये जब भी भारत सरकार की ओर से किसी अदालत में मुकदमा चलवायें तो बहुत सोच कर कदम रखें। ऐसा न हो कि लेने के देने पड़ जायें।

दूसरा सुझाव आपकी सेवा में यह है कि जहां तक हो सके विरोधी पार्टियों पर डंडे का इस्तेमाल करते रहें ताकि आपकी इच्छानुसार कांग्रेस एक होकर मजबूत हो जाये।

आपका

चितली

मुख्य पृष्ठ पर

सुनो सुनो भई राम प्यारी
बहुत सुने थे छाता धारी।
कोई गिरा और कोई पटका
कोई बीच गगन में लटका।
यह कैसा ऊपर से आया
छाता भर चिड़ियां है लाया।
इसका तो है खेल निराला
क्यों भई बाबू क्यों भई लाला ?



दीवाना

अंक : ४१, २० अक्तूबर से २६ अक्तूबर १९७७ तक
वर्ष : १३

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर १५ रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —स०

काका के कारतूस

प्रश्न दीवाना के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

पवन कोचर 'बिल्ला', सिरसा (हरियाणा)

प्र० : काकाजी, यदि आप लड़की होते तो मैं आपसे ही शादी करता ?

उ० : कहते हम फटकार कर, पकड़ो अपनी राह,
बिल्ला पिल्ला से नहीं, काका करें विवाह ।

सुरेश कुमार गुप्ता, बेरमो (हजारीबाग)

प्र० : काका-काका सब कहें काकी कहे न कोय,
सब वोटर काकी कहें, तो बोलो क्या होय ?

उ० : काकी गद्दी पर चढ़ें, जनता पार्टी जाय,
राजनारायण जी कहें, हाय-हाय रे हाय ।

सुरेश खुराना, जींद (हरियाणा)

प्र० : अगर दोस्ती के बीच में कोई दीवार आ जाये तो ?

उ० : प्रेम-पंथ के बीच में, आ जाए दीवार,
रहम करो मत फाड़ दो, मिलकर दोनों यार ।

विजय कुमार भाटिया, करनाल

प्र० : हमने तो उसको दिल दिया महबूबा समझकर,
वह काट करके खा गई खरबूजा समझकर ।

उ० : तुम खाना चाहते थे जिसे, पूआ समझकर,
अब उसके पांव पूजो, बन्नी बूआ समझकर ।

प्रदीप कुमार सरिया, भद्रपुर (नेपाल)

प्र० : काकाजी, आपकी दाढ़ी ज्यादा कीमती है या चिल्ली की चोटी ?

उ० : चित्रकार है एक तो, दूजी काव्य कमाल,
अक्ल होय तो आंक लो, करके खुद पड़ताल ।

कुमार हीरा प्रभाकर, सहर्षा (बिहार)

प्र० : काकाजी, आपको दुनिया वालों ने क्या दिया ?

उ० : हमने बांटा हास्यरस, हुई उदासी दूर,
इसके बदले में मिली वाह-वाह भरपूर ।

अजिन्दर सिंह डंग, कालकाजी

प्र० : घर का त्याग कब करना चाहिये ?

उ० : धंधे चौपट होंय सब, निबट जाय धन-माल,
अपने घर को त्याग कर, चले जाउ ससुराल ।

छवि थवाईत, रायगढ़ (म. प्र.)

प्र० : लड़की समझती अधिक है, बोलती कम है, ऐसा क्यों ?

उ० : बोल इकट्ठे कर रही, देख रही है राह,
अधिक बोलना पड़ेगा, जब हो जाय विवाह ।

केवल साहनी, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : औरतें अपना फालतू समय कैसे व्यतीत करती हैं ?

उ० : कैसी तेरी ननदिया, कैसी मेरी सास,
निंदा-आलोचना में, टाइम करतीं पास ।

चंद्र प्रकाश सिंधी, बरेली

प्र० : आदमी 'पाजामा' कब कहलाता है ?

उ० : ऊपर से पहन करके इन्सानियत का जामा,
कर जाय हजम करजा, समझो उसे पाजामा ।

अशोक जौहर, देहरादून

प्र० : दिल बहलाने के लिए किसका सहारा लेना चाहिए ?

उ० : मनरंजन को देखिए, 'दीवाना' चुपचाप,
या फिर क्लब में बैठकर, गप्प हांकिये आप ।

विजय वी हट्टी, माडल टाऊन (दिल्ली)

प्र० : काका के कारतूसों पर छापा पड़ जाये तो ?



उ० : जब डालने को छापा, पापा पुलिस के आएं,
स्टाक खाली पाएं, झकमार लौट जाएं ।

कुमार सुशील 'अकेला', खगड़िया

प्र० : झूठ-सत्य की परिभाषा करिये काकाजी ?

उ० : सत्य का करके अनुसंधान, निकाला है हमने यह तथ्य,
बोलिये एक झूठ सौ बार, वही बन जायेगा ध्रुव सत्य ।

राकेश विज, श्याम नगर (नई दिल्ली)

प्र० : प्रेमी-प्रेमिका छुपकर मिलते हैं, तो दिलों की धड़कन तेज क्यों हो जाती है ?

उ० : चोरी-चोरा प्रेम में, कुछ भी मजा न आय,
उथल-पुथल दिल में रहे, जाने, को आ जाय ?

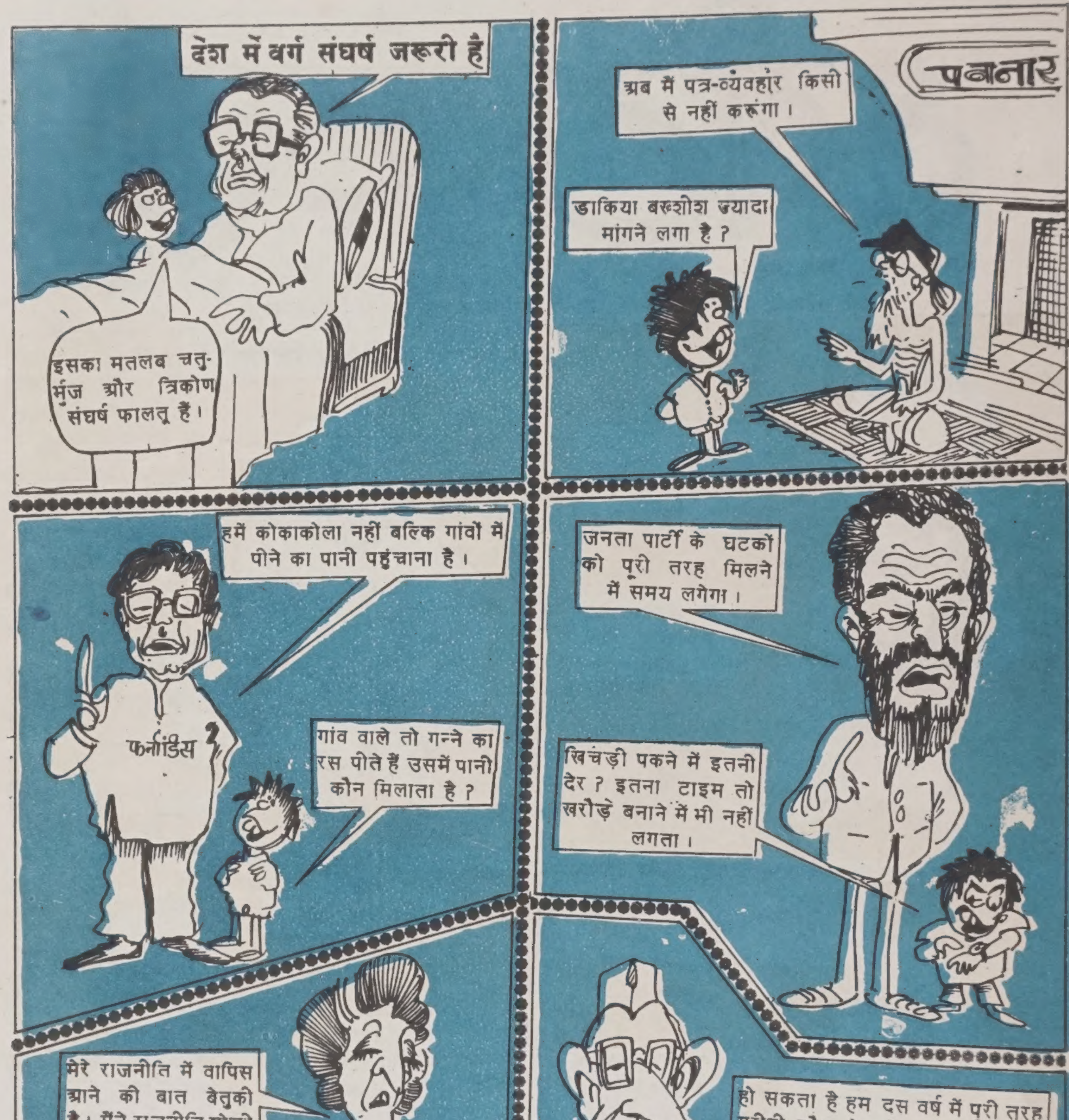
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतूस
८-बी बहादुर शाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली ११०००२

छींटाकशी

आजकल राजनीतिक नेता कुछ न कुछ बोलते ही रहते हैं। उनके बोलों पर सिलबिल के भतीजे गोवर्धन ने जो टिप्पणियां या रिमार्कस दिये हैं वह आपके मनोरंजन के लिए प्रस्तुत हैं–





देश में वर्ग संघर्ष जरूरी है
इसका मतलब चतुर्भुज और त्रिकोण संघर्ष फालतू हैं।
अब मैं पत्र-व्यवहार किसी से नहीं करूंगा।
डाकिया बख्शीश ज्यादा मांगने लगा है ?
हमें कोकाकोला नहीं बल्कि गांवों में पीने का पानी पहुंचाना है।
फर्नांडिस
गांव वाले तो गन्ने का रस पीते हैं उसमें पानी कौन मिलाता है ?
जनता पार्टी के घटकों को पूरी तरह मिलने में समय लगेगा।
खिचड़ी पकने में इतनी देर ? इतना टाइम तो खरौड़े बनाने में भी नहीं लगता।
मेरे राजनीति में वापिस आने की बात बेतुकी है। मैंने राजनीति छोड़ी ही कब थी ?
न राजनीति आप छोड़ सकती हैं। न राजनीति आपको छोड़ सकती है।
हो सकता है हम दस वर्ष में पूरी तरह गरीबी और बेकारी दूर न कर सकें कुछ समय और लग जाये ?
हमारे लिये पांच-सात मिनट फालतू लग जायें तो कोई बात नहीं।

धारावाहिक जासूसी उपन्यास

पहली किस्त

आखिरी चीख

लेखक :
कैप्टन युद्धवीर

सुधा गुजराल पैंतालीस-छियालीस वर्ष की एक स्वस्थ महिला थी। पन्द्रह साल की छोटी-सी आयु में उसकी शादी एक बूढ़े धनी व्यापारी ईश्वरचन्द गुजराल के साथ कर दी गई थी। सुधा के माता-पिता निर्धन थे लेकिन उनकी इच्छाएं और अरमान बहुत ऊंचे थे। सुधा का पिता एक साधारण व्यापारी था। वह सट्टेबाजी से अमीर बनना चाहता था, लेकिन जीवन के उतार-चढ़ाव के बावजूद वह निर्धन का निर्धन ही रह गया था।

उसने अपनी बेटी को मालदार व्यापारी के साथ ब्याह कर खुद भी मालदार बनना चाहा था। यही तो उसकी सबसे बड़ी तमन्ना थी। तिकड़म भिड़ा कर उसने अपना यह सपना साकार कर ही लिया।

दौलतमंद व्यापारी से नाता जोड़ कर उसके वारे-न्यारे हो गए। बेटी सुधा अपने पिता के लिए सोने की खान सिद्ध हुई।

सुधा ने दो बेटियों को जन्म दिया। शादी के तीन साल बाद वह विधवा हो गई। इस तरह से सुधा शाहजहांपुर की सबसे धनी महिला बन गई।

कुछ साल और गुजरे तो सुधा के माता-पिता भी भगवान को प्यारे हो गए। सुधा को कुछ दौलत और मिल गई, क्योंकि अपने माता-पिता की वह इकलौती सन्तान थी।

समय पाकर सुधा की दोनों बेटियां जवान हुईं। उनका रंग-रूप ऐसा निखरा कि देखने वाले उन पर से अपनी नजरें न हटा सकते।

सुधा ने जीवन का कोई आनन्द नहीं उठाया था। कुल तीन साल उसका सुहाग बना रह सका था। सारा ध्यान उसने अपनी बेटियों पर लगाए रखा था। दोनों बेटियों की सुन्दरता और सलोनेपन पर वह खुशी में फूली न समाती। नाम भी उसने चुन कर रखे थे—पूर्णिमा और नरोत्तमा। उन्हें ऊंची शिक्षा दिलाई गई।

बड़ी लड़की पूर्णिमा की शादी एक बड़े घराने में कर दी गई। उसका पति डिजाइनिंग इंजीनियर था। एक बड़े आर्कीटेक्ट की फर्म में वह असिस्टेंट डायरेक्टर था। अक्सर उसे टूर पर जाना पड़ता था। जब वह बाहर गया होता तो पूर्णिमा अपनी मां के पास चली जाती।

उसका पति स्वदेश कुमार मित्तल आठ दिन के लिए टूर पर गया हुआ था, मगर वह छठे दिन ही लौट आया। वह रात होने पर घर पहुंचा था। उसे पता चला कि पूर्णिमा अपनी मां के यहां है। कार लेकर वह सीधा ससुराल को रवाना हुआ। सुधा भी उसे मां का सा प्यार देती थी।

ससुराल में उसका हार्दिकस्वागत हुआ। हां, पत्नी को वहां न पाकर उसे गहरी निराशा हुई।

'पूर्णिमा कहां है?' स्वदेश कुमार ने पूछा।

'वह अपनी सहेली के यहां गई हुई है। उसकी सहेली श्रद्धा की छोटी बहन का ब्याह है। वहां गीत-संगीत का प्रोग्राम है। श्रद्धा उसे खींच कर ले गई। मैं अभी उसे फोन करती हूं कि वह चली आए।'

सास की बात सुन कर स्वदेश कुमार ने कहा, 'नहीं, पूर्णिमा को फोन करने की जरूरत नहीं। उसका सारा मजा किरकिरा हो जाएगा। रात-भर की तो बात है। सवेरे वह आ ही जाएगी।' यह कह कर उसने अगड़ाई ली।

'कुछ खाओगे?'

'नहीं।'

'क्यों?'

'मैंने गाड़ी में खाना खा लिया था। अब तो जोरों की नींद आ रही है।' यह कह कर वह पूर्णिमा के बैडरूम की ओर चल दिया।

स्वदेश कुमार रात के दस बजे आया था, इसलिए सुधा और नरोत्तमा को भी नींद सता रही थी। वे दोनों भी सोने के लिए चली गईं।

नरोत्तमा का बैडरूम पूर्णिमा के बैडरूम के साथ ही था। वह अपने बैडरूम में आकर पलंग पर लेटी तो करवटें बदलती रह गई। नींद उसकी आंखों से भाग सी गई थी। वह अविनाश के बारे में सोचने लगी, जिससे उसका रोमांस चल रहा था। नरोत्तमा अंग्रेजी में एम. ए. फाइनल कर चुकी थी अब वह शादी करना चाहती थी।

कुछ ही देर में टेलीफोन की घंटी बजने लगी। टेलीफोन ड्राइगरूम में था।

नरोत्तमा के बैडरूम की दूसरी ओर उसकी मां का बैडरूम था। फोन की घंटी बजने पर साथ वाले बैडरूम में हलचल-सी हुई। फर्श पर घिसटते हुए स्लीपरों की आवाज सुनाई दी। इसका मतलब था कि उसकी मां अपने बैडरूम से ड्राइंगरूम की ओर जा रही थी।

दो मिनट बाद उसने मां की आवाज सुनी—'हलो!'

सुधा किसी से बात कर रही थी। वह किससे बात कर रही थी और क्या बात कर रही थी, यह नरोत्तमा न जान सकी।

कुछ पल बाद ही उसने चीख सुनी। यह सुधा की मर्मवेधी चीख थी।

फौरन बाद किसी के गिरने और मेज से किसी चीज के टकराने की आवाज आई।

नरोत्तमा का दिल धक-धक धड़कने लगा। वह सहम कर उठ बैठी। हिम्मत बटोर कर वह पलंग पर से कूदी।

पूर्णिमा के बैडरूम में उसका पति बेसुध सोया पड़ा था। सन्नाटे में मर्मवेधी चीख ने उसे भी एक झटके के साथ जगा दिया। वह भी पलंग पर से कूदा।

नरोत्तमा तेज-तेज चाल से ड्राइंगरूम की जा रही थी।

स्वदेश कुमार भी उसके पीछे-पीछे लपका।

ड्राइंगरूम में बड़ी मेज के पास सुधा चित गिरी पड़ी थी। वह जरा भी हिलडुल नहीं रही थी। रिसीवर मेज से टकराने के

बाद मेज के साथ अभी तक झूल रहा था।

नरोत्तमा ने दोनों हाथ फैलाकर पुकारा, 'मां !...मां !' वह दर्द भरी आवाज में पुकारती हुई मां की ओर बढ़ी। मां का सिर, उसने अपनी गोद में रख लिया। अपने गाउन के किनारे से वह उसे हवा करने लगी।

स्वदेश कुमार गहरी नींद से जागा था और हैरान-सा खड़ा था।

नरोत्तमा ने सुधा की दोनों कनपटियों पर हथेलियां रख कर उसका चेहरा दाएं-बाएं हिलाते हुए कहा, 'मां, क्या हुआ ? किसका फोन था ? तुमसे फोन पर किसने क्या कहा ?'

सुधा गुजराल ने आंखें खोलीं तो उसी पल दर्द के मारे उसका बदन अकड़ गया। उसने आंखें जोर से भींचीं। मोटे-मोटे आंसू उसकी पलकों से बह निकले।

'मां !' नरोत्तमा ने दर्दीली आवाज में पुकारा।

सुधा ने रुंधे हुए गले को खखारकर साफ किया और दर्दभरी आवाज में बोली, 'भगवान ले गया मेरी बेटी को ! पूर्णिमा बेटी...मेरी लाडों-पली बेटी को भरी जवानी में भगवान ले गया !'

'क्या कहा मां ?...दीदी...' नरोत्तमा इतना ही कह पाई थी कि उसका गला भर आया। वह सिसकियां भर-भर कर रोने लगी।

अब स्वदेश कुमार भी चौंका। उसे किसी भयानक दुर्घटना का आभास हुआ। वह सुधा और नरोत्तमा की ओर लपका। मां-बेटी के कंधे रोने के कारण जोर-जोर से हिल रहे थे।

'क्या हुआ ?' स्वदेश कुमार ने घबराई हुई आवाज में पूछा, 'माता जी, क्या हुआ ?'

'बेटा स्वदेश ! पूर्णिमा की सहेली श्रद्धा का फोन आया था।'

'क्या बताया उसने ?'

'यह कि सिंगार-मेज के सामने पूर्णिमा का हार्ट फेल हो गया।'

अब स्वदेश कुमार भी पीड़ा से तड़प गया। उसकी आंखें भीग गईं। पूर्णिमा से उसे गहरा प्यार था। अपने घर और अपनी सोसाइटी की वह उसे शोभा समझता था। यह विचार कि अब पूर्णिमा नहीं रही, स्वदेश कुमार के कलेजे पर छुरियां चलाने लगा।

मां-बेटी तड़प-तड़प कर रोए जा रही थीं।

'मैं विश्वास नहीं कर सकता कि पूर्णिमा का हार्ट फेल हुआ है। वह तो एकदम सेहतमंद युवती थी।' स्वदेश कुमार बोला।

'मेरी बेटी के तो सिर में भी कभी दर्द नहीं हुआ था। हे भगवान ! तूने यह कैसा जुल्म किया ? यह उसके जाने की उम्र तो नहीं थी !' सुधा विलाप करती रही।

'मुझे दीदी के पास ले चलो, मां ?' नरोत्तमा ने रोते-रोते कहा।

'वो लोग उसे यहीं ला रहे हैं, बेटी !' सुधा ने जवाब देकर विलाप शुरू कर दिया, 'मेरी बेटी हंसती-चहकती गई थी। श्रद्धा मेरी लाडली को जीती-जागती ले गई थी। अब उसे हमेशा की नींद सुला कर यहां लाया जा रहा है।' इसके साथ ही सुधा धाड़ें मारने लगी।

नरोत्तमा भी 'बैन' करने लगी।



स्वदेश कुमार निढाल होकर सोफे पर बैठ गया। उसने आंखों पर हाथ रख लिये। आंसू उसकी उंगलियों में से धारा बन कर बहने लगे।

पूर्णिमा की लाश कार में लाई गई। श्रद्धा, उसके भाई और माता-पिता साथ थे।

सुधा गुजराल ने बेटी का निर्जीव शरीर देखा तो पछाड़ खाकर गिर पड़ी। कुछ देर वह बेहोश रही।

सारा घर चीखों और पीड़ाओं से भर गया।

स्वदेश कुमार ने श्रद्धा को इशारा करके एकान्त में बुलाया। उसने पूछा, 'हुआ क्या था ?'

श्रद्धा के गालों पर अब भी आंसुओं के निशान थे। वह उदास आवाज में बोली, 'पूर्णिमा बहुत नाची, बहुत गाई। यहां तक कि पसीने में नहा गई। उसके चेहरे का पाउडर बिगड़ गया। वह मेरे बेडरूम में अपने चेहरे का मेक-अप संवारने चली गई।'

'उसे सबसे पहले निर्जीव हालत में किसने देखा ?'

'जब वह देर तक न लौटी तो मैं उसे ढूंढ़ने अपने बेडरूम में गई।' श्रद्धा ने बताया, 'मैंने पूर्णिमा को स्टूल से नीचे गिरे हुए देखा। उसके सुनहरे बाल गलीचे पर जैसे बिछे हुए थे। गले पर पाउडर लगा था।

स्वदेश कुमार अपनी पत्नी की लाश एक नजर देख चुका था। अब वह नये सिरे से लाश को ध्यान से देखने के लिए चला गया।

रोने-चीखने की आवाजों से. कानों के पर्दे फटे जा रहे थे।

श्रद्धा की मां ने निचले होंठ पर उंगली रख कर कहा, 'अंधेर ही हो गया !'

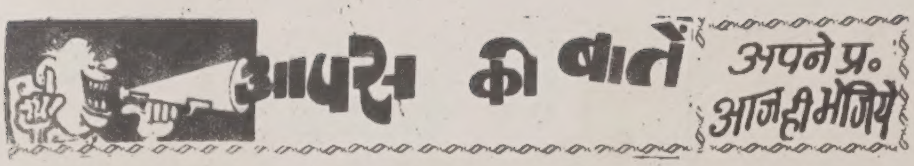
उसका पति बोला, 'मौत न जाने कब से घात लगाए बैठी थी !'

स्वदेश कुमार अपनी पत्नी की लाश को घूरे जा रहा था। पूर्णिमा का चेहरा मौत के बावजूद सुन्दर लग रहा था। वह सोई जान पड़ती थी। उसके बदन पर खरोंच या घाव का कोई निशान नहीं था। विष का भी कोई असर दिखाई नहीं दे रहा था, वर्ना शरीर का रंग नीला पड़ चुका होता।

यह सब देख-सोच लेने पर भी, स्वदेश कुमार का दिल यह मानने को तैयार नहीं था कि पूर्णिमा का हार्ट फेल हो गया था।

(पृष्ठ ३१ पर)


कुक डूं कूं
मुर्गे यार तुम रोज बांग देकर अपना गला क्यों दुखाते हो ? मैं तुम्हें किराये पर एक टेप-रिकार्डर लाकर दूंगा— एक बार रिकार्ड कर लो फिर जब बांग देने का टाइम आये तो बस टेप चला दिया ।
दीवाना
पंचतंत्र
यह देखो, असली जापानी माल सोनी का उड़ा लाया हूँ। यह लो टेप-रिकार्डिंग के लिए तैयार है । जरा बांग दो । फिर मैं प्ले करके दिखाऊंगा ।
अच्छा ।
लाओ आज का अंडा ।
यह लो । बटन दबाया और बांग हाजिर है अपनी मुर्गी का एक अंडा रोज किराया देना।
कुक डूं कूं
यीSSS!
यम ! यम !! मजा आ गया । अब रोज मुझे एक अंडा मिला करेगा ।
दूसरे दिन ।
लाओ आज का अंडा ।
यह लो ! मैंने भी कल तुम्हारी आवाज टेप कर ली थी । वही सुन लो । अंडा-वंडा कुछ नहीं मिलेगा ।
यी SSS ! यम ! यम !! मजा आ गया ।
यह क्या चारसोबीसी है ? मैंने तुम्हारा गला दुखने से बचाया ।
मैं भी तो तुम्हारी अंडा खाने की आवाज सुनाकर तुम्हें मुंह चलाने के कष्ट से बचा रहा हूं ।
भला कहीं बांग देने में मुर्गे का गला दुखता है ?
भला कहीं खाने के लिये मुंह चलाने से दर्द होता है ?



प्रहलाद जसकाली, मंगला : अपने साथ आप चाची का फोटो भी क्यों नहीं छापते ?

उ० : आप खुद ही सोचिये, पोजेटिव के साथ नेगेटिव भी छपेगा तो क्या अच्छा लगेगा।

गिरधर लाल रंगा, बीकानेर : यदि आपको प्रधान मंत्री बना दिया जाये तो आप क्या करेंगे ?

उ० : वही जो जनता पार्टी कर रही है। सबसे पहले इस जांच के लिये आयोग बिठायेंगे कि हमें इस मुसीबत में किसने डाला है।

अविनाश कोहली, दिल्ली : यदि चाची जी गुम हो जायें तो उन्हें ढूंढ़ने के लिये क्या आप ढोल पिटवायेंगे ?

उ० : इससे पहले ही कोई दरवाजा पीट कर कह देगा कि—

सुलझा था उसी जाल में फिर फंस के वो आये,
ओ हंसने वाले रो के जरा हंस के वो आये।

एक बार कुछ डाकू उन्हें उठा कर ले गये थे और उन्होंने मांग की कि यदि हम उन्हें दस हजार रुपया दे तो वे आपकी चाची जी को लौटा देंगे उत्तर में हमने कहा, यदि वे उन्हें अपने पास ही रख लें तो हम उन्हें बीस हजार रुपया दे देंगे।

बी लाल अहमद कादरी बेताब, बीकानेर : सुना है आप हेमा मालिनी के घर चोरी करते पकड़ गये थे ?

उ० : देखिये, आप इस पत्र पर धर्मेन्द्र की बजाय हमारा पता लिख गये हैं क्या ?

सुरेन्द्र अग्रवाल, तिनसुकिया : क्या मैं दीवाना के लिये कार्टून या चटकुले भेज सकता हूं ?

उ० : अवश्य भेजिये, पर दिल मजबूत करके। आपकी उम्र में जब हम किसी पत्रिका में चुटकुले भेजते थे और वे सम्पादक को पसन्द नहीं आते थे, तो हम अपना दिल टूटने से पहले ही उसे जोड़ने के लिये 'कुईक फिक्स' तैयार कर लेते थे।

नवोदय प्रकाश, दिल्ली : क्या हम दीवाना का क्लब बना कर उसमें लड़कियों को भी सदस्य बना सकते हैं ?

उ० : जी हां, क्यों नहीं। पर क्लब की हर एक्टेविटी की जिम्मेदारी आपकी अपनी होगी। हमारे सर पर तो आप देख ही रहे हैं कि कितने बाल हैं।

बलदीप सिंह बल, बरनाला : क्या आपकी 'कलम दवात में बातों का कारखाना लगा है ?

उ० : जी हां, इस कारखाने का उत्पादन बढ़ता ही रहता है।

मनोज कुमार सरस्वती, भागलपुर : दुनिया में बहुत कम लोग सच क्यों बोलते हैं ?

उ० : सच्ची बात तो यह है कि आपने भी सच नहीं बोला है। दुनिया में लोग सच नहीं बोलते, यही एक काम तो वह सच्चाई से करते हैं।

अशोक माहेश्वरी 'साजन', डिबाई : क्या आप भी उतने ही टेढ़े हैं जितने टेढ़े प्रश्नों के उत्तर देते हैं ?

उ० : इसके लिये हम क्या कह सकते हैं साहब, एक बार एक आदमी एक अंधे को भोजन करा कर पुण्य कमाने के लिये उसके पास गया तो बोला, 'चलिये सूरदास, मैं आप को खीर खिलाऊंगा।' अंधे को पता नहीं था कि खीर कैसी होती है। उसने पूछा, 'मुझे खीर का पता नहीं खीर कैसी होती है ?' उस आदमी ने कहा, 'सफेद बुगले जैसी सफेद' अंधे ने पूछा, 'बुगला कैसा होता है ?' उस आदमी ने अपने हाथ को बुगले की गर्दन जैसा बना कर उस पर अंधे बाबा का हाथ फिरवाया और बोला, 'ऐसा', इस पर अंधा चौंक कर पीछे हट गया और बोला, 'नहीं-नहीं मैं खीर नहीं खाऊंगा।' यह तो बहुत टेढ़ी खीर है।

कमल कांत जैन, दिल्ली : चाचा जी, आपने अपने बुढ़ापे को काटने के लिये क्या स्कीम बनाई है ?

उ० : अभी तो हमें ढलती जवानी काट खाने को दौड़ रही है, बुढ़ापा काटने की बात हम क्या सोचें।

रामप्रताप—अलीगढ़ : कोई आपको मूर्ख कहे तो आपको बुरा नहीं लगता ?

उ० : यह समस्या एक बार अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक जार्ज बर्नांडशॉ के सामने भी आई थी। उनके एक विरोधी ने एक बार उनका अपमान करने के लिए एक पुल पर से उनका रास्ता रोक लिया था। पुल इतना पतला था कि उस पर से एक समय में एक ही आदमी गुजर सकता था। जार्ज बर्नांडशॉ जब घूमते हुए गुजरे और पुल पार करने लगे तो अपने विरोधी से बोले, 'पुल पार करने के लिए रास्ता दो भाई'। इस पर उस आदमी ने कहा, 'मैं मूर्खों को रास्ता नहीं देता।' इस पर बर्नांडशॉ ने कहा, 'मैं तो दे देता हूं। चलिये आप गुजर जाइये।' और इसके साथ ही शाह ने एक ओर हटकर उसे रास्ता दे दिया।

राजीव जैन—हल्दवानी : आप घसीटाराम जैसे काम क्यों शुरू नहीं कर देते ?



उ० : क्यों जी, क्या आपको यह आठ-दस बाल भी बुरे लगते हैं क्या, जो हमारे सर पर बचे हैं।

दुलीचन्द शर्मा—हिसार : अंकल, आपके विचार में सब से अच्छी अभिनेत्री कौन है ?

उ० : झूठ पूछो तो अभी नेत्र ऐसे नहीं हैं हमारे कि अच्छे बुरे की पहचान कर सकें। सच बोल दिया तो पता है, एक सप्ताह तक घर में चूल्हा नहीं जलेगा। आजकल श्रीमती जी पड़ोस के एक लड़के से दीवाना की एक-एक लाइन पढ़वाने लगी हैं।

आपस की बातें
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

परोपकारी



बात-बे-बात की



और दाद खाँ गुजर गये

—बाल पाण्डेय

परसों समाचारपत्र में पढ़ा, दाद खां गुज़र गये। बीस पाइन्ट हेडिंग वाली ये खबर पढ़ कर ही मुझे शाक लगा। शाक भले आदमी को ही लगता है और मैं अपनी नजरों में बेहद भला आदमी हूं। आप कह सकते हैं, क्या कहना, अपने मुंह मियां मिट्ठू। मैं कहता हूं, आपने कबीर को पढ़ा है? कबीर साफ लिख गए हैं 'जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय'। ये बात है, चार-पांच सौ बरस पहिले की। दुनिया में काफी प्रगति हुई है। साहित्य और सर्जरी में बेतहाशा परिवर्तन हुए हैं। सर्जरी में साहित्य और साहित्य में सर्जरी समाविष्ट हो गई। और इस दृष्टि से आज के परिप्रेक्ष्य में 'जो दिल खोजा आपना तो मुझ से भला न कोय' ही कहना चाहिए। कबीर इनफीरियारटी काम्प्लेक्स से पीड़ित रहे होंगे। बहरहाल मैं भला आदमी हूं और भला आदमी ही शाकित याने शाक्ड होता है। अभी तक घड़ियां हो शाक-प्रूफ बनती हैं। शायद आगे चलकर आदमी भी शाक-प्रूफ होने लगें। तो दाद खां गुजर गए, मुझे दुख हुआ। दाद खां नाम के अनुरूप धर्मावलम्बी नहीं थे। उनका नाम था श्री वी० वी० शर्मा। वे बड़े काव्य मर्मज्ञ और रसज्ञ श्रोता थे। जहां भी काव्य गोष्ठी हो, वी० वी० शर्मा उर्फ दाद खां हाजिर। कवियों और काव्य गोष्ठियों में दाद खां वैसे ही पापुलर थे, जैसे क्रिकेट खेलने में नबाब पटौदी और क्रिकेट कमेन्टरी करने में विज़ी। कवि के मुंह से कविता निकली नहीं कि दाद खां ने दाद देना शुरू की। दाद देने के कारण ही, इनका नाम दाद खां पड़ गया। वैसे लोगों ने पहिले इनका नाम 'वाहवा' शर्मा रखा परन्तु ये कुछ जमा नहीं। अन्ततोगत्वा इनका नाम दाद खां चल निकला।

एक काव्य गोष्ठी का जिक्र है। किसी बाहरी कवि की सम्मान गोष्ठी थी। दाद खां भी गोष्ठी में हाजिर थे। गोष्ठी शुरू हुई, पहिले कवि ने कविता पढ़ना शुरू की और दाद शुरू हुई। दाद खां हर पंक्ति पर दाद देने के आदी। उनकी दाद का ये आलम कि अध्यक्ष ने कहा कि अब श्री लटेश जी गीत प्रस्तुत करेंगे। इसी पर दाद खां वाहवा कहने लगते। मान लीजिये किसी कवि की कविता चार छन्दों की है और प्रत्येक छन्द में ६-६ पंक्तियां हैं और इस तरह कुल मिलाकर २४ पंक्तियां हुईं, तो दाद खां चौबीस बार दाद देंगे। इस तरह हिसाब लगाया जाये कि अगर एक साधारण काव्य गोष्ठी में यदि दस कवि हैं और दसों कवियों की कुल कविता की पंक्तियां औसत हिसाब से ढाई सौ हुयीं तो दाद खां की दाद ढाई सौ बार होती। लेकिन जिस काव्य गोष्ठी की मैं चर्चा कर रहा हूं उसमें दो कवियों ने अपने खण्ड काव्य सुनाये और दाद खां को उस दिन साढ़े तीन हजार बार दाद देनी पड़ी। विनोबा भावे ने तो साढ़े तेरह बरस में मात्र तेरह हजार भाषण दिये थे, दाद खां ने मात्र ७-८ बरसों में इस हिसाब से डेढ़ करोड़ बार कवि को दाद दी। और उस दिन उन्होंने तीन घंटे की काव्य गोष्ठी में जब हजार बार दाद दी तो दूसरे दो दिनों तक वे छाती के दर्द से बीमार रहे।

कस्बे के लोगों का कहना है, दाद खां को कवियों ने मार डाला दाद ले-लेकर। कोई कहता कि दाद खां को दमा हो गया था, कोई कहता उसे टी० बी० हो गई। लेकिन इतना जरूर है कि दाद खां के न रहने से काव्य गोष्ठियों का मजा किरकिरा हो गया।

एक बार गोष्ठी में कस्बे का एक हकला कवि आ गया। गोष्ठियों में बहुदा हकला कवि आने से हिचकता था और लोग-बाग भी उसे चिढ़ाते थे। क्योंकि लोगों का कहना था कि एक तो यह कवि-सौ-सौ पंक्तियों की लम्बी कविता लिखता है, सो २५-३० मिनिट की तो यों ही कविता होती है। ऊपर से गीयर बदल कर याने हकला कर कविता पढ़कर ये सौ पंक्तियों को दो ढाई सौ बार सुनाता है। लेकिन उस दिन गोष्ठी में कुछ रसिकों को दाद खां और हकलेश जी याने हकले कवि का आनन्द लेना था क्योंकि अभी तक कभी हकलेशजी और दाद खां को सुनने-सुनाने का मौका नहीं पड़ा था। सो लीजिये साहब, गोष्ठी शुरू हुई। दो तीन कवियों के बाद नम्बर आया श्री हकलेश जी का। 'हकलेश जी भी बड़े चतुर थे। वे कस्द करके आये थे कि ज्यादा से ज्यादा दाद वे आज दाद खां से लेंगे, अन्य कवियों की अपेक्षा,



क्योंकि कस्बे के कई कवि कहने लगे थे कि फलां ..ष्ठी में मैंने डेढ़ सौ बार दाद ली, कोई कहता ढाई सौ बार दाद ली और जिसे ज्यादा मिली वह अपने को बड़ा कवि मान लेता। बहरहाल हकलेश का जब नम्बर आया और अध्यक्ष ने उनका नाम प्रस्तावित किया पढ़ने को तो हकलेशजी बोले—एक मु··मु··मु··मु··मुक··मुक··मुक्तक पे··पे···पेश है। हकलेश जी ने इतना ही कहा था कि दाद खां भी कम नहीं थे दाद देने में। वे दाद के हर हुनर से वाकिफ थे, उन्होंने भी दाद दी उसी लहजे में वाव्वा··वा··वाव्व···वा··वाव्व··वा। तीन मिनिट तक गोष्ठी में. मुक्तक पेश होने की दाद का मजा आ गया। जब लोगों की हंसी रुकी तो हकलेश जी ने आगे मुक्तक पढ़ा—

कि··कि किसी··के··श··श··शाप की
फिकर नहीं, दि··दि··दि··दिल्लगी नहीं कि
क··क··कवि हूं, कि··कि··कि··किसी के
बा··बा··बा··बाप की फिकर नहीं।

क्या बात है, क्या बात है, हकलेशजी कमाल कर दिया। इस मुक्तक पर हकलेश जी को दाद खां ने पूरे पांच मिनिट तक दाद दी क्योंकि एक मिनट का मुक्तक गीयर बदल-बदल कर प्रस्तुत करने में हकलेशजी को पांच मिनिट लग गए। लेकिन गोष्ठी ने इसका मजा दस मिनिट तक लिया। दाद ने निवेदन किया कि एक बार और हो जाए साब, मुकर्रर इरशाद। लोगों ने भी हंसते हुए कहा—हां साब, एक बार और हो जाए। किसी ने कहा, नहीं भाई, अब कोई तरन्नुम के साथ चीज हो जाये। हकलेश जी ने निवेदन किया मुझे स··स··सस्वर पढ़ना नहीं आता। दाद खां ने कहा कोई मुजायका नहीं, एकाध रुबाई या मुक्तक और हो जाये। अध्यक्ष ने भी आग्रह किया। हकलेशजी ने दूसरा मुक्तक शुरू किया—

इस स् स् स् स्तर ऊं··ऊं ऊंचा
क··क करते करते—अपना बि··बि··बिस्तर
गोल् हो गया,
म··म··म··म··मण्ड··मण्डले का इ
··इ इतिहास लिखा था—ब··ब··ब··
बस्तर का भूगोल हो गया।
कि...कि...कि··कितनी बदल ग··ग··
गई है दुनिया—जो क··क··क··कल थी ओ
··ओ—आज नहीं है,
मृ··मृ··मृ··मृ··मृदंग दिया था हमने
म··म··मढ़ने—म··म··मढ़ा गया तो ढ··
ढ··ढ··ढोल हो गया।

हकलेशजी के इस दूसरे मुक्तक ने और भी मजा ला दिया। हंसते-हंसते लोगों के पेट में बल पड़ गए। दाद देते-देते दाद खां के मुंह से फेन निकलने लगा। कुछ लोगों के हंसते-हंसते आंखों में आंसू आ गए। इस बीच अध्यक्ष ने कहा 'भाइयों, संयोग से हमारे बीच आज जार्जीशजी उपस्थित हैं, ये कविता अंग्रेजी में लिखते हैं लेकिन हिन्दी के तरन्नुम से पढ़ते हैं। वैसे इनका नाम जियालाल है, मगर आप जानते हैं हिन्दी में कवियों के उपनाम लटेश, ब्रजेश, अलकेश, फटेश आदि होते हैं। इसलिए इन्होंने भी अपना 'जार्जीश' रख लिया है। हां तो भाई जार्जीशजी, सुनाइए। जार्जीशजी ने बड़ी विनम्रता से कहा, सज्जनों, मैं कविता तो अंग्रेजी में लिखता हूं लेकिन कविता के तरन्नुम का मैंने हिन्दीकरण कर लिया है। एक काव्य गोष्ठी में मैंने श्री राजेशजी को सुना। उन्होंने अंग्रेजी में बिरहा लिखा और उसे हिन्दी लोकगीत के स्वरों में प्रस्तुत किया, नमूने के लिए उनकी प्रथम पंक्ति सुनिए—

दाइ ब्यूटी
दाइ ब्यूटी विल फेड वन डे
दाइ ब्यूटी।

उससे प्रभावित होकर मैंने भी अनुकरण किया। सुनिए गहरे पेथास का गीत—

आन पंचरिंग माई हार्ट सापट
ओ डियर व्हेयर यू गो,
ओ ट्रेडर आफ फारन कण्टरी
फर्स्ट क्लियर एकाउण्ट एण्ड गो।

दाद खां ने अंग्रेजी में दाद दी 'ग्रेड ग्रेशश, मारवेलस, वेरी फाइन, व्हाट एन आइडिया।' श्रोताओं को तरन्नुम में मजा आ गया। जार्जीश की वाहवाही शुरू हो गई। इतने में सिगरेट पीते हुए वर्माजी, जो एक कोने में अन्यमनस्क से बैठे थे और तारीफ सुन भुन-भुना रहे थे, आखिर बोल ही पड़े 'व्हाट ग्रेन्ड प्लेजरी! रबिश'। दाद खां चौंक पड़े। पूछ बैठे 'क्या कहा वर्माजी, प्लेजरी प्लेजरी याने साहित्यिक चोरी, क्या मतलब आपका?' वर्माजी बोले, 'कवि सम्मेलन और काव्य गोष्ठी में यही फर्क है, जितना नाटक और नौटंकी में। काव्य गोष्ठी में आपको पारखी लोग मिलेंगे। म्युनिसिपेल्टी की मेम्बरी जिसने की हो, वह सफल एम० एल० ए० या एम० पी० हो सकता है। ये बुनियादी बात है।' दाद खां बोले, 'वर्माजी पहेलियां क्या बुझा रहे हो, साफ-साफ कहो न?' वर्मा जी तपाक से बोले प्यारे भाई जार्जीश ने जो पद्यांश सुनाया यह शबनम फिलम का एक गीत है—

मेरा दिल तड़पा के कहां चला
इतना तो बता के जा
ओ! दूर देश के सौदागर
कर्जा तो चुकाता जा।

समझे जनाब। जार्जीश समझता है, यहां सब अहमक ही बैठे हैं।' वर्मा जी के इस कथन से श्रोताओं की त्यौरियां बदल गईं। जार्जीश को काटो तो खून नहीं। गोष्ठी का वातावरण ही बदल गया। एक बोले, 'ये होता है भाई गोष्ठी में, असल नकल की परख हो जाती है।' दूसरे बोले, 'हां भाई, तभी तो पेशेवर कवि गोष्ठी में आने से कतराते हैं।' वर्माजी बोले, 'अरे भाई हिन्दी जानने वाला हर दसवां आदमी अपने आपको कवि मान बैठा है। एक लतीफा है, राजा भोज के यहां काव्य गोष्ठियां हुआ करती थीं। अच्छी कविता पर कवि पुरस्कार पाता था, कालिदास निर्णायक होते थे। पुरस्कार के लालच में चार लफन्टू काव्य गोष्ठी में पहुंचे और बोले हम लोग भी कविता सुनायेंगे। राजा भोज ने कहा अच्छा सुनाओ—चारों ने कहा, महाराज! हम चारों केवल एक-एक पंक्ति सुनाएंगे और चारों की मिलकर एक चतुष्पदी हो जायेगी। राजा ने कहा सुनाओ तो। उसने सुनाना शुरू किया—

पहिला बोला—
मुनुन मुनुन रहटा मुन्नाय
दूसरा बोला—
तेली का बैल खली भुस खाय
तीसरा बोला—
भुज मां चमके बाजू बन्द
चौथा बोला—
राजा भोज जस मूसर चन्द

उन चारों की क्या गति हुई भोज के यहां, सो तो राम जाने। लेकिन दाद खां जैसे आदमी आज भी उनको दाद देंगे।'

बरसों हो गए जब मैंने ऐसी ज्ञानवर्धक गोष्ठी में भाग लिया था। उन दिनों गोष्ठियों में कचरा साफ हो जाता था, चोकर सब निकल जाता था मैदा-मैदा बच रहता था। उन दिनों की गोष्ठियों में वही फर्क था जो तुलसी की रामायण और राधेश्याम की रामायण में। (साभार [illegible])


थारी जनता पार्टी सारे देश मां पूरी नशाबन्दी लागू करने जा रही है। इब थारा क्या होगा ? अपनी बर्थडे थम एक-एक बोतल ठर्रा पीकर मनाया करते थे। भुस के माव मारे गिये बिचारे।
चूहे, हमको पहले ही शक था कि तू पक्का कांग्रेसी है।
चलो, ऐसा ही सही, मैं तो थारे साथ मिलया भी इसी कारण था कि थमारे भेद कांग्रेस पार्टी को बताता रहूं।
यो शराब ही तो थी जिसको पीकर थमने गला फाड़-फाड़ कर लेक्शन के दिनों में पार्टी के नारे लगाये थे। ठर्रे के दम पर थमने नंगे पैर गांव-गांव जाकर पार्टी का प्रचार किया। सोंने को जंगे नहीं मिली तो बोतल पीकर घास पर ही लेटें रहते थे। जिस चीज ने पार्टी के वरिष्ठ वर्करों की इतनी मदद करी अब वही खत्म होने जा रही है। थारी पार्टी अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार रही है। शराब पीकर कितना जोश आता था थारे मां ? कई बार थमने नशे में कांग्रेसी वर्करों की अंधेरी गलियों में डंडी से पिटाई भी करी थी। ईंटें मार कर कई कांग्रेसियों के सर फाड़ दिये थे। याद है वह दिन ?
शऽऽऽऽऽ ! मार-पिटाई वाली बात नहीं बोल्या करते। फौजदारी केस बनता है। तू म्हारे को मरवाने लगया है ?
हमारी पार्टी इतनी बेवकूफ नहीं है। उसको पता है कि उसके वर्कर नादान नहीं हैं। अपने गुजारे का खुद ही कोई न कोई रास्ता खोज लेंगे। जनता पार्टी के वर्कर लल्लू-पंजू थोड़े ही हैं, सारे वकील, डाक्टर, जज या प्रोफेसर हैं। हम फशकिलास जासूस हैं। हम अपने लिये शराब खुद ही घर में ही बनायेंगे। इतनी साइंसदानी हमको भी आती है।
घर की निकली सराब के रंग ही कुछ होर होते हैं। उसमें कोई गन्दी-फन्दी चीज नहीं पड़ती, खालिस ताजा माल होता है। हम चावल या जो की शराब डालेंगे। अपने हाथ की निकली हुयी जो होती है उससे गुर्दा भी खराब नहीं होता।
जे बोलो हलधर की !


कहीं थम मजाक न समझो इसलिये हम थमको अभी शराब बना कर दिखाते हैं। थमारी आंखें खुल जायेंगी। शराब कशीद करने का यह पॉकेट फार्मूला हिमालय की कन्दराओं में १०० साल तपस्या करके आये जोगी ने मुझे बताया था।
राशन का घटिया चावल दो किलो लेकर उसे साधे पकने तक उबालो और फिर पीच समेत उसे एक बहुत बड़े मिट्टी के घड़े में डालो।
गुड़डुम्म!!
अब उसमें लाहण का पुट दो। लाहण से चावल फर्मेन्ट हो जायेंगे। यानि दस-पन्द्रह रोज में तेज खमीर उठ जायेगा। उबाल आने लगेगा।
दस-पंद्रह रोज तो बीत होते हैं। इतनी देर कौन इतनी इंत-जारी करेगा? कोई शार्टकट होना चाहिये. चट मंगनी और पट चियर्स ही जाये। इतने दिनों में तो पुलिस के छापे का भी खतरा है।
जल्दी का उपाय तो मुझे आता नहीं? क्या करें?
इनको यह नहीं बताना चाहिये कि मुझे शार्टकट नहीं आता। वैसे भी इन पर मैंने रौब गांठ रखा है कि मुझे सब कुछ आता है।
शार्टकट बहुत आसान है। यह देखो कुछ ही घंटों का खेल। इसमें मैंने एक बोतल गंधक का तेजाब डाल दिया और दो बोतल सिरका भी पड़ेगा। फिर देखना कमाल, मैं क्या-क्या करता हूं?
बड़ा अजीब फार्मूला है।
और साहब यह डली डाल दी नौशादर की। नौशादर से शराब तेज हो जाती है।
वेरी कम्पलीकेटिड प्रोसेस सर!
और यह देखो, हम इस छिपकली को पूंछ काट कर इसमें डालेगा। इससे शराब में बिजली की सी तड़फ आ जायेगी। बलैती क्वालिटी की ब्रांडी बनाने का गुप्त फार्मूला है।
चलो तो फिर कोबरा सांप का सिर काट कर भी इसमें डाल देते हैं ऐसी शराब बनेगी कि थमने उम्र भर नहीं पी होगी।
भाई जी, थम यह जो डाल रिये हो तो सराब जहर नहीं बन जायेगी।



मूर्ख प्राणियों, जो कुछ इसमें डल रहा है केवल उसका सत्त निकलेगा। जैसे दूध से मक्खन निकाला जाता है। प्यार का नशा दो दिन रहता है, इसका नशा उम्र भर रहेगा। हम तुम्हारे फायदे के लिये ऐसी शराब निकालने जा रहे हैं जैसी नूरजहां ने भी जहांगीर के लिये नहीं खिंचवाई होगी। नशाबन्दी लागू होने से एक दिन पहले हम यह पी डालेंगे। फिर उसके बाद पीने की जरूरत नहीं रहेगी। इसी के नशे में हम उम्र भर डोलते फिरेंगे। यह सुपर सुरा होगी।
धन्य हो महाराज!
तो चलो आओ हम चारों तरफ नजर दौड़ा कर देखते हैं कि शराब में डालने लैक और क्या-क्या चीज मिलती है।
नशे वाली सारी चीजें इकट्ठी करके खिचड़ी पका लो और नशाबन्दी की गर्दन तोड़ दो।
यह कुर्सी भी तोड़ कर डाल दो इसमें।
बेवकूफ! सबसे जादा नशा तो इसी कुर्सी में है। इसके लिये कितनी छीना झपटी और मारकाट होती है। इसी के लिये तो जनता पार्टी और कांग्रेस में महाभारत रची है। इस पर बैठने वालों को सत्ता का नशा तो सुप्रीम है।
कुर्सी का क्या मतबल?
गरीब चन्द ठीक कहता है यह सबसे नशे वाली चीज है। यह लो कुर्सी भी डाल दी मैंने इसमें कुल्हाड़ी से काट कर।
गोरी की आंखों के नशे की भी बड़ी मशहूरी है। चलो ऐक्ट्रस रेखा की आंखें निकाल कर इसमें डाल देते हैं।
तुझे पता नहीं है उसने आंखों का दस लाख का बीमा करवा रखा है।
अब इसमें डालने वाली एक ही चीज रह गई है। वह है पेंट्रोल—बगैर पैट्रोल के शराब ऐसे ही होगी जैसे बिना पंडित के यज्ञ।
पेंट्रोल क्यों?



सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

आपके पत्र

दीवाना का अंक ३६ मिला । इस बार सभी स्तंभ बड़े लाजवाब थे । विशेषकर 'कोफ्त होती है जब', 'वह दिन दूर नहीं जब' तथा 'चिल्ली-लीला' आदि । यहां दीवाना बहुत देर से पहुंचता है, जिससे हम प्रतियोगिताओं में भाग नहीं ले पाते हैं । आप ऐसा करें कि प्रतियोगिताओं की अंतिम तिथि बढ़ा दिया करें ।

रवि रंजन, सासाराम (बिहार)

दीवाना का अंक ३७ काफी इतजार के बाद मिला । इस अंक में मोटू-पतलू, मदहोश, चाचा बातूनी आदि विशेष रुचिकर लगे । चिल्ली का ढोल बजाने का नया तरीका अत्यन्त हास्यप्रद था । इस अंक में वह सारी सामग्री थी जो एक अच्छी हास्य पत्रिका में होनी चाहिये । इस अंक में आपने 'रंग भरो प्रतियोगिता' भी दी अतः बधाई स्वीकार करें । आप 'रंग भरो प्रतियोगिता' नियमित रूप से प्रारम्भ क्यों नहीं करते ?

विनोद कुमार भाटिया—मेरठ

दीवाना अंक ३६ में 'दीवाना पंचतंत्र' स्तंभ के अंतर्गत छपी चित्र कथा इतनी मर्मस्पर्शी एवं शिक्षाप्रद थी कि पूछिए मत । (जिसमें एक 'पक्षी' माँ अपने बच्चों को उड़ना सिखाती है) 'दैनिक फिलिमस्तान' को कृपया स्थायी स्तंभ कर दें । क्योंकि हमें इसने बहुत प्रभावित किया । काका के कारतूस में छपे प्रश्न उत्तर की छपाई ने तो चार चाँद लगा दिए । वैसे जवाब तो आठ चाँद लगा ही देते हैं । पिलपिल-सिलबिल के बिना तो दीवाना अधूरा है । इनकी बातें हमें बहुत अच्छी लगती हैं । कृपया इनके चित्रकार का नाम बताएं ।

'मोटू-पतलू' के चित्रकार से अनुरोध है कि वह अपने किसी एक पात्र को पंजाबी पात्र का रूप जरूर दें ।

सुरेन्द्र तनेजा—श्रीगंगानगर (राज०)

कई नये खूबसूरत फीचर और अनेकों विशेषतायें लिये हुए दीवाना का अंक नं० ३६ प्राप्त हुआ । 'बड़ी कोफ्त होती है जब' 'वह दिन दूर नहीं जब' आदि फीचर इतने सुन्दर बन पड़े कि प्रशंसा के लिये शब्द नहीं हैं । 'दैनिक फिलिमस्तान' आप जारी रखेंगे ऐसी आशा है । सत्य पर विचित्र, क्रिकेट का बादशाह गैरी सोबर्स, मोटू पतलू - इस अंक के मुख्य आकर्षक थे । 'खून का तूफान' बेहद पसन्द आ रही है ।

हरदीप गुलाटी—नई दिल्ली

मैंने दीवाना का नया अंक ३४ प्राप्त किया और उसके बाद मैं इतना प्रसन्न हुआ कि जैसे किसी भूखे को रोटी मिल जाये । 'दीवाना' को लेकर मैं पढ़ने बैठा तो तब तक न उठा जब तक कि पूरा दीवाना खत्म नहीं हो गया ।

मेरा सुझाव यह है कि दीवाना में धारावाहिक कहानियों की जगह छोटी-छोटी चटपटी कहानियां निकाली जायें । क्योंकि बच्चे एक कहानी पढ़ते-पढ़ते ऊब जाते हैं । 'बन्द करो बकवास' की जगह छोटे-छोटे वैज्ञानिक लेख निकाले जायें । इस तरह बच्चों की ज्ञान-वृद्धि भी होती रहेगी ।

अजय कुमार चतुर्वेदी—जौनपुर

दीवाना की यही तो एक खास खूबी है कि हर अंक में कुछ न कुछ नई सामग्री होती है जिससे हमारे मनोरंजन में कमी नहीं आती । दैनिक फिलिमस्तान पढ़कर मजा आ गया । प्रतियोगिताओं के तो कहने ही क्या हैं । चिल्ली महोदय से मेरी एक विनती है कि अब वह नेताओं की जगह अभिनेताओं पर प्रेम-पत्र लिखना आरम्भ कर दें । क्योंकि नेताओं के पत्र अब बोर करने लगे हैं ।

गनेश मित्तल—गाजियाबाद

मैं कई वर्षों से दीवाना पढ़ता आ रहा हूं । यह पत्रिका हास्य-व्यंग की भंडार है । यह पत्रिका मुझे बहुत रोचकपूर्ण लगती है । अभी मैंने दीवाना का ३५वां अंक पढ़ा । मुखपृष्ठ पर चिल्ली का सर्कस देखकर हंसते-हंसते मैं चारपाई से फर्श पर गिर पड़ा ।

इस अंक में काका के कारतूस, अर्थ-अनर्थ और क्यों और कैसे स्तम्भ बहुत ही पसन्द आये ।

चिन्ताराम गिरि 'राजा'—दुलियाजान

दीवाना का ३४वां अंक कुछ देर से मिला । क्योंकि हम लोगों का यह इलाका कई दिनों तक बाढ़ से घिरा हुआ था । इस अंक में 'डाक-टिकट और विज्ञापन' फीचर बहुत ही अच्छा लगा । सरकार को इस उपाय का अवश्य अमल करना चाहिये । मेरा एक निवेदन है कि 'अर्थ अनर्थ' स्तम्भ को समाप्त कर दें क्योंकि प्रायः हिन्दी के सभी अर्थ-अनर्थ वाक्य इस स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित हो चुके हैं और दोबारा प्रकाशित हो रहे हैं ।

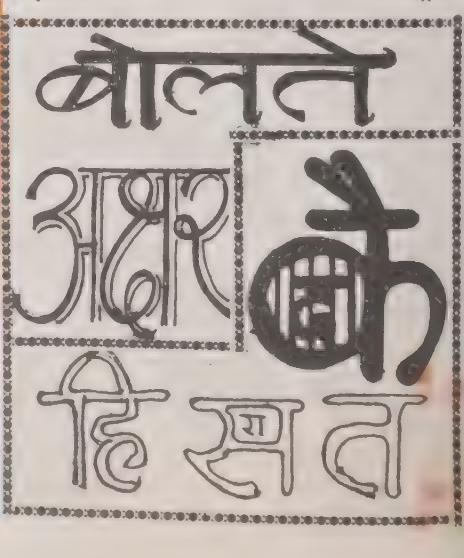
नारायन शर्मा—नाहरकटिया

अत्यन्त आश्चर्य हुआ 'दीवाना' का नवीनतम अंक ३६ देख कर ! पृष्ठ ३६ पर अंक ३२ में आयोजित 'माऊथ आर्गन जीतिये प्रतियोगिता' का जो हल प्रकाशित किया गया है तथा जिस कवि की रचना को पुरस्कार दिया गया है वह किस आधार पर दिया गया है ?

'आप इसी आजादी पर हमें आठ लाइनों की कविता लिख भेजिए । कविता में किसी व्यक्ति विशेष जैसे (बंसी लाल, संजय आदि) या पार्टी का जिक्र करें ।' ये पंक्तियां प्रतियोगिता के नियमों के अन्तर्गत प्रकाशित हैं । सम्पादक महोदय स्पष्टीकरण दें कि न तो पुरस्कृत कविता आठ लाइनों की ही है और न ही किसी व्यक्ति विशेष का जिक्र ही किया गया है । फिर कविता किस आधार पर पुरस्कृत की गई ?

अविनाश वाचस्पति—नई दिल्ली

पुरस्कृत कविता में जनता पार्टी की तरफ इशारा किया गया है । यह जरूरी नहीं कि नाम खुले शब्दों में ही हो । आठ पंक्तियों का जहां तक प्रश्न है, कहने का तात्पर्य यह था कि कविता आठ लाइन से बड़ी न हो । छोटी से कोई अन्तर नहीं पड़ता । **—सं०**



मोटू-पतलू
भगवान की वापसी

चाय के बागों के मालिक प्रोफेसर ए-टू-जैड के साथ उसके जहाज में दार्जिलिंग जाते समय मोटू-पतलू को चाय की खेती का लालच था और घसीटाराम वहां स्वर्ण मंदिर में सोने के खजाने की खोज करना चाहता था। रास्ते में प्रोफेसर के विरोधिओं ने उनका जहाज मार गिराया था और घसीटा राम को वहां के नरभक्षी आदिवासी अपना भगवान समझ कर उठा ले गए थे। वे अपने भगवान की पूजा कैसे करते हैं, जरा यह तो देखिए।



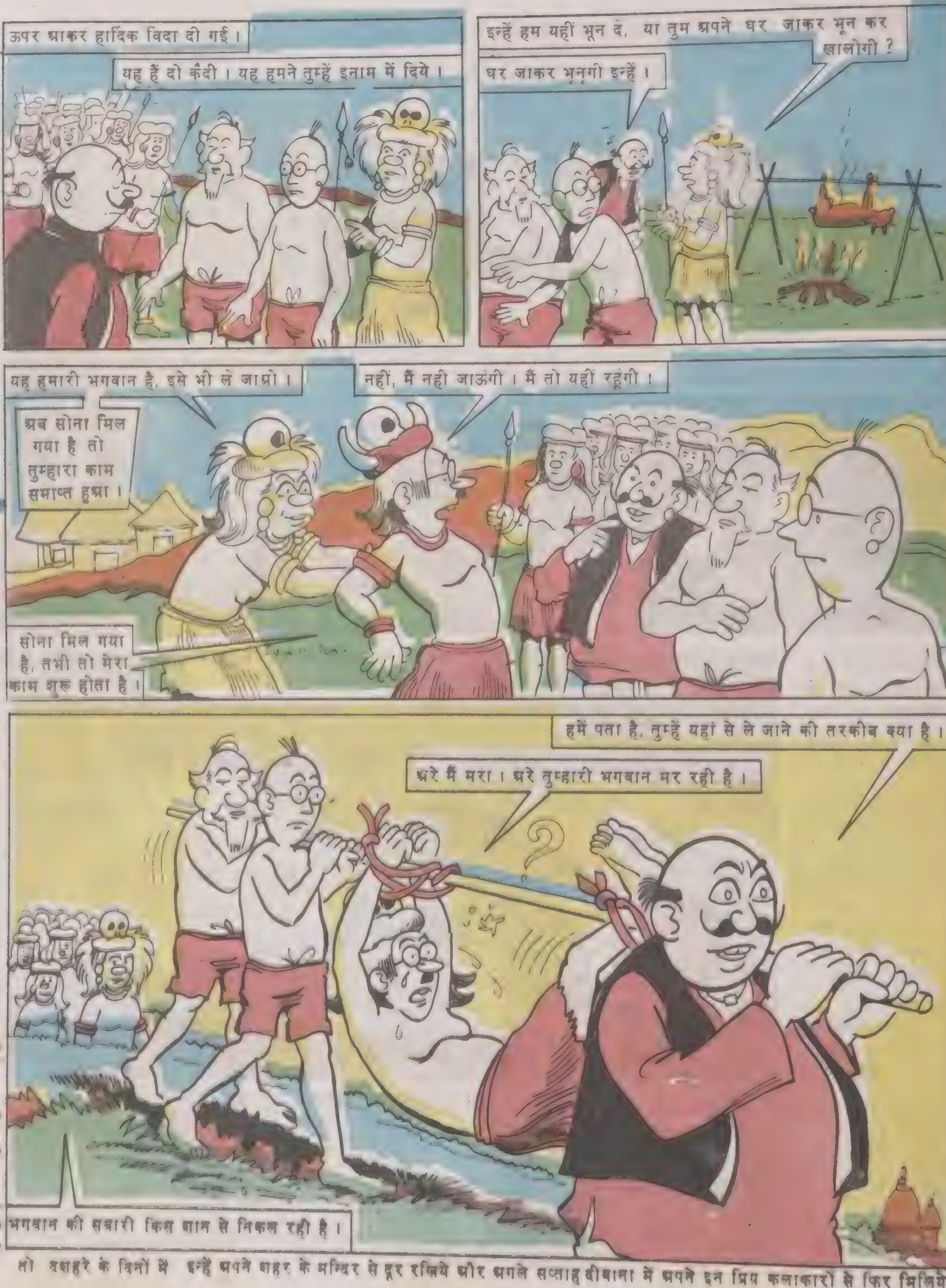

पहरेदारों के कपड़े बदल कर मोटू-पतलू और प्रोफेसर ए-टू-जेड अब नरभक्षी आदिवासी बन गये थे ।
अब ऊपर मंदिर में चलो ।
हमें हर कीमत पर घसीटाराम को बचाना है ।
पत्थर का दरवाजा बहुत भारी है ।
वहीं मंदिर का पुजारी अपने कुछ साथियों के साथ मंदिर के पीछे से निकल आया ।
यह कौन है ? पहरेदार हैं तो अन्दर क्यों जा रहे हैं ?
वह रहा घसीटाराम ।
अरे हमारे साथ निकलकर भाग ले मुरली वाले ।
कौन हो तुम ? क्या कर रही हो यहाँ ?
क्या मंदिर के अन्दर जाने का दरवाजा यही है ?
अगर तुम पहरेदार हो तो क्या यह भी नहीं जानतीं कि मंदिर का दरवाजा यही है ?
जी हां, मैं यही पूछ रहा हूं । क्या कहा ?



पूछ रहा हूं, या पूछ रही हूं ? तुम भेष बदले हुये कहीं बाहर से आई हो ?
नहीं, मैं भरोसा दिलाकर बदलूंगा नहीं ।
बदलूंगा नहीं, या बदलूंगी नही ?
तभी वहां एक और नरभक्षी भागा-भागा आया ।
जंगल में
हमारी दो पहरेदार बेहोश पड़ी हैं
इन्होंने ही पहने हैं इनके कपड़े उतारकर । पकड़ लो इन्हें । और सांपों वाले तहखाने में डाल दो । कल हम इन्हें भून कर खाएंगे ।
लगता है अपनी कहानी समाप्त हुई ।
अभी तो एक ही देखा है ।तहखाने में देखना और कितने मिलेंगे ।इनसे बचोगे तब हम खायेंगे तुम्हें
लगता है अपने बहरेपन के कारण मारे गये हैं हम ।
उधर मोटू घसीटाराम से बच कर भाग निकलने के लिये बहस कर रहा था ।
मैं अपनी जान हथेली पर रखकर तुम्हें बचाने आया हूं । और तुम उल्टी-सीधी हांके जा रहे हो । क्या तुम्हें अपनी जान का भय नहीं है ?
वह तो है, पर सोने का खजाना ?
पर मैं इनका भगवान हूं ।
अब यहां कोई सोने का खजाना नहीं है । तुम भुन तो चुके हो ।
तुम इनके मिट्टी के महादेव भी नहीं हो । यूं कहो कि सोने का मोटू चिपटा हुआ है ।
कुछ भी हो, मैं यहां से नहीं जाऊंगा । तुम मुझे भाड़ में जाने दो । मुझे मरने दो । तुम मेरी जान बचाने वाले कौन होते हो ?
क्या आदमी है, या आलू बुखारा है ?


तभी वहां मंदिर का पुजारी आ गया।
देखो, यह तुम्हारे भगवान को ले जाना चाहता है।
कौन हो तुम ? कहां से आई हो ?
कहां से आई हो ? यहां उल्टी बोली चलती है ??
मैं भगवान की सेक्रेटरी हूं। मैं स्वर्गलोक से आई हूं।
तुम्हारी भगवान को ले जाने ?
ज़ी हां, मुझे देवताओं ने खास तौर पर भेजा है। वहां एक अर्जेण्ट मीटिंग में भगवान की आवश्यकता है। वहां दुनिया भर के सोने का हिसाब करना है।
पर हमारे सोने का हिसाब तो अभी हुआ ही नहीं। भगवानहमें बताते ही नहीं कि हमारा सोना कहां है ?
भगवान तुम्हें चिट्ठी भेजकर बता देंगे।
नहीं। मैं चिट्ठी लिखकर नहीं, यहीं रहकर बताऊंगा।
वैसे हमें यह बताओ कि तुम्हारा सोने का भण्डार था कहां ?
आओ मेरे साथ।
यहां था सोने का भण्डार एक मंदिर में।
अब तो यहां कुआ है।
पहले यहां भण्डार था, एक दिन धरती हिली और पूरा मंदिर निगल गई। फिर पता नहीं हमारा सोना कहां गया ?
मोटू अब दूर एक ज्वालामुखी पहाड़ की ओर देख रहा था और एक बात कुछ-कुछ उसकी समझ में आ रही थी।
फिर उसने कुएं में झांक कर देखा।
कुएं से फिर वह कुछ नीचे उतरा तो बात साफ हो गई।
यहां तो कुछ नहीं है। हमने कई बार नीचे उतरकर देखा है।


मैं भगवान की सेक्रेट्री हूं । तुम मेरी तरह नहीं देख सकती । मेरे पास अभी स्वर्गलोक से ट्रककाल आई है । भगवान को अपने साथ ले जाने के लिये । मैं तुम्हें तुम्हारा सोना दिलवा दूंगी । पर उसके साथ एक शर्त है ।
जब तुम्हें अपना सोना मिल जाये, तो अपने भगवान को मेरे हवाले कर देना ।
मन्जूर है । हम तुम्हें दो और आदमी भी देंगे । भून कर खाने के लिए । हमने कुछ देर पहले ही पकड़े हैं ।
दो आदमी पकड़े हैं ।
ऊपर रस्सी बांधकर मन्दिर के पुजारी के साथ कुएं में से होता हुआ गहरी खाई में उतरने लगा ।
मोटू ने कुछ रस्सियां और फावड़े भी मंगवाये और खुदाई के लिये कुएं में उतर गया ।
एक सुराख में से वहां पहाड़ के नीचे खाई नजर आ रही थी । कुछ फावड़े मारने पर ही वहां का दृष्य साफ हो गया ।
खाई में से नीचे उतरे, तो उनके सामने सोने का भंडार था । जिसके बारे में कुएं में बने बारीक सूराख से देख कर मोटू ने अनुमान लगा लिया था कि कभी ज्वालामुखी का लावा निकलने के कारण भूकम्प आया होगा और धरती फटने से मन्दिर और इसका सोना यहाँ खाई में आ गया होगा । ऊपर किसी और जगह से यह सोना दिखाई नहीं देता था । और न ही किसी और रास्ते से यहां आना इतना आसान था ।
मिल गया तुम्हारा सोना ?
तुम तो महान हो । क्या नाम बताया तुमने अपना ? भगवान की···?
भगवान की सेक्रेटरी ।
भगवान की सैक्रेटरी ।
अब तुम्हें अपना वादा याद है ?
याद है । तुम भगवान को भी ले जाओ और दो कैदियों को भी ।



तो दशहरे के दिनों में इन्हें अपने शहर के मन्दिर से दूर रखिये और अगले सप्ताह दीवाना में अपने इन प्रिय कलाकारों से फिर मिलिये।

छुट्टन और मिट्ठन का जादू

आपको जैसे भगवान पर विश्वास है, ऐसे ही छुट्टन और मिट्ठन को इस बात पर विश्वास है कि संसार का सारा ज्ञान किताबों में भरा पड़ा है। किताबें पढ़कर आदमी कुछ भी सीख सकता है और अपने नाम के झंडे गाड़ सकता है। पिछले दिनों छुट्टन और मिट्ठन ने गोगिया पाशा के जादू के खेलों की एक फिल्म देखी तो उनके सर पर भी जादूगर बनने की धुन सवार हो गई। और वे जादू के खेलों पर ढेर सारी किताबें बाजार से उठा लाये। जरा इनके कमाल तो देखिये।




देखिये साहेबान । अभी कान पकड़ कर खरगोश को बाहर निकालता हूं । अभी खरगोश को देखकर आपकी आंखें फटी रह जाएंगी ।
मेरे कान पर काट कर भाग गया है यह खरगोश का बच्चा ।
अब देखो खरगोश के कान । लोग सांस रोके बैठे हैं ।
पाकिस्तान में भुट्टो की हालत ऐसी नहीं होगी जैसी इस खरगोश ने मेरी कर दी है ।
देखिये साहेबान, निकल आया हैट में से खरगोश ।
तुमने क्या निकाला है,अपनी आंखों में भीमसैनी काजल लगाकर देखो ।
चीटिंग-
लोगों की आंखें तो फटी की फटी रह गयी हैं । यह पता नहीं हमारे कपड़े फटेंगे या नहीं ।
हमारे पैसे वापस दो ।
आगामी अंक में छुट्टन और मिट्ठन के नये कमाल देखना न भूलिये ।

प्र० : जन्म से ही बालकों को सूत तथा रेशम की करधनी पहनाने का क्या उद्देश्य है ?
बाबूराम 'तनसुक'—शाहदरा

उ० : करधनी पहनने की प्रथा केवल भारतवर्ष में ही पायी जाती है। अन्य देशों में इसका भिन्न रूप है। इसके पहनने से बालक आंतों के रोग से बच जाता है और आंतों को अपने स्थान से हटने का भय नहीं रहता। यूरोप आदि देशों में पैंट आदि के ऊपर पेटी बांधने की प्रथा है। सेना में पेटी कसकर तैयार रहना पड़ता है। कमर कसने से शरीर में चुस्ती एवं फुर्ती आती है। थकावट प्रतीत नहीं होती। स्त्रियां अपनी साड़ी, पुरुष अपनी धोती या पायजामे का नाड़ा कमर पर ही बांधते हैं।

प्र० घड़ियों का आविष्कार कब और किसने किया ?
सतविन्दर—दुर्ग

उ० यान्त्रिक घड़ियों का आविष्कार लगभग सन १२०० ई० के समीप हुआ था। प्रारम्भ में घड़ियां वजन से चलाई जाती थीं। एक रस्सी में भार बांधकर उसे एक ढोल पर लपेट दिया जाता था, ढोल के घूमने से एक प्रकार का यन्त्र चलता था जिससे नियत समय के बाद घंटा बजता था। घड़ी की सुइयों और डायल की खोज सन १४०० तक नहीं हुई थी। इसी समय किसी ने कायल स्परिंग का निर्माण किया और उसे घड़ी में वजन की जगह प्रयोग किया। इससे घड़ी का आकार छोटा हो गया। जेब घड़ी सन १५०० में पीटर हेनलेन नामक व्यक्ति ने बनाई थी।

प्र० : टेलिविजन पर चित्र कैसे बनते हैं ?
कु० थारवानी—कटनी

उ० : टेलीविजन पर चलते हुए चित्र प्रसारित करने से पहले उन्हें विद्युत संकेतों में बदलना पड़ता है शुरू में जब टेलीविजन पर चित्र प्रसारित किये जाने लगे, तो पता चला कि पूरा चित्र एक साथ प्रसारित करना बहुत महंगा पड़ता है इसलिए इस कठिनाई को दूर करने के लिए वैज्ञानिकों ने एक और उपाय निकाला। चित्र को छोटे-छोटे भागों में बांट दिया, छोटे-छोटे भागों को उनकी चमक की मात्रा के आधार पर प्रसारित किया जाता है। एक विद्युदणु किरण टेलीविजन के फामफोरस के लेप किये हुए परदे पर पड़ती है, और वह लेप चमकने लगता है। ये किरण परदे पर बहुत तीव्र गति से

क्यों और कैसे

चलती है, ताकि चित्र के सब भाग अपने अपने ठीक स्थान पर, ठीक चमक के साथ उभर कर दिखाई दें। इसी प्रकार टेलीविजन पर चित्र दिखाई देते हैं।

प्र० : यदि शहर में वृक्ष न हों तो क्या होगा ?
अवध किशोर श्रीवास्तव—जबलपुर

उ० : वृक्ष शहरों की सुन्दरता को बढ़ाते हैं वृक्षों की हरियाली आंखों को सुखद प्रतीत होती है। वृक्षों से जमीन की मिट्टी अपनी जगह पर रहती है क्योंकि वृक्षों की जड़



धरती में दूर-दूर तक फैली रहती हैं। यदि वृक्ष न हों तो शहरों में धूल बहुत अधिक उड़े और सब कुछ वीरान सा लगे। दूसरे वृक्षों द्वारा शहरों की घनी आबादी को स्वच्छ हवा प्राप्त होती है। घने वृक्षों की छाया गर्मी में पैदल चलने वालों को बहुत आराम पहुंचाती है। वृक्षों पर पक्षी अपने घोंसले इत्यादी बनाते हैं और सुबह-सुबह उन का कलरव भी शहरवासियों को सुनाई दे जाता है। फूल और फल भी वृक्षों से प्राप्त होते हैं। इससे आप जान गये होंगे कि वृक्ष कितने आवश्यक हैं।

प्र० : औरतों के दाढ़ी मूंछ क्यों नहीं होती ?
राजेश कुमार सिंहा, मुज्जफर पुर—बिहार

उ० : बच्चे जब पैदा होते हैं तो उनके शरीर पर बारीक बाल होते हैं। कुछ और बड़े होने पर ये बाल पुरुषों और स्त्रियों में अलग-अलग रूप धारण कर लेते हैं। इन बालों का बढ़ाव लिंग ग्रन्थियों पर निर्भर होता है। पुरुष जाति में हारमोन इस प्रकार काम करते हैं कि बाल, दाढ़ी, मूंछ और शरीर पर बढ़ते हैं किन्तु सिर के बाल कम बढ़ते है। इसके बिलकुल विपरीत स्त्री जाति के हारमोन काम करते हैं। उनके सिर के बाल बढ़ते हैं परन्तु दाढ़ी मूंछ के नहीं। उनके शरीर में स्थित लिंग ग्रंथियां दाढ़ी मूंछ के बाल बढ़ने से रोकती हैं।

प्र० : मनुष्य को नींद आने का क्या कारण है ? स्वप्न क्यों और कैसे आते हैं ?
बालमुकुन्द अग्रवाल—लखनऊ

उ० : यदि आप जानना चाहते हैं कि नींद क्यों आती है तो आप एक लम्बे समय तक सोये बिना देखिये। आपको पता चलेगा कि आपका दिमाग और शरीर दोनों ही बहुत थक जायेंगे और आप कोई भी काम भली भांति नहीं कर पायेंगे। आप एक दम चिड़-चिड़े हो जायेंगे और आप किसी भी काम पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पायेंगे। इससे पता चलता है कि नींद के समय ही शरीर के सारे कोशाणु अपने को दुबारा काम करने योग्य बनाते हैं, और फिर से काम करने की शक्ति एकत्रित करते हैं। यही कारण है कि नींद हमारे लिए परमावश्यक है।

नींद में हमें स्वप्न आते हैं, स्वप्न कोई बाह्य शक्ति द्वारा नहीं भेजे जाते और न ही उन से हमें अपने भविष्य के बारे में पता चलता। सारे स्वप्न हमारी मनोभावनायें, डर, इच्छा, यादें अथवा आवश्यकताओं पर निर्भर होते हैं। ये ठीक है कि स्वप्नों पर बाहर घटने वाली कुछ बातों का प्रभाव पड़ता है, जैसे यदि कोई भूखा हो या थका हुआ हो अथवा ठंड महसूस कर रहा हो तो उसके स्वप्नों पर इस बात का प्रभाव पड़ सकता है। यदि सर्दी में आप के ऊपर से लिहाफ खिसक जाये तो सम्भव है कि आप को स्वप्न आये कि आप बर्फ पर लेटे हैं। स्वप्न में हम वह भी देखते हैं जो हम करना चाहते हैं परन्तु कर नहीं पाते। उदाहरणत : भूखे मनुष्य को खाना, बच्चों को परियां, विद्यार्थी को परीक्षा तथा बन्दियों को स्वतन्त्रता के स्वप्न आते हैं। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि स्वप्न उन इच्छाओं को पूरा करते हैं जो अधूरी रह जाती हैं या दूसरे शब्दों में स्वप्न अपनी इच्छा पूरी करने का एक ढंग भी है।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११...

टेनिस कैसे खेलें

समय-निर्धारण—समय के निर्धारण का महत्त्व किसी से कम नहीं है। यदि गेंद को समय के पहले या बाद में मारा गया तो वह अधिक ऊँची या नीची जा सकती है। समय-निर्धारण की क्रिया गेंद की गति, भूमि तथा उसके प्रक्षेपण-पथ और दिशा से सम्बन्धित है और यदि यह ठीक हो तो गेंद को उचित फासले और ठीक ऊँचाई पर बिना आश्चर्य-चकित हुए रोका जा सकता है।

शरीर का भार—जब रैकेट को पीछे की ओर घुमाया जाता है और साथ-साथ पैरों को आगे की ओर झूलन देने के लिए तैयार किया जाता है तो शरीर के भार को पिछली टांग पर डाल देना चाहिए और जैसे ही आगे की ओर झूलन प्रारम्भ हो, भार को मारने वाले हाथ के साथ-साथ आगे की ओर आ जाना चाहिए।

झूलन का प्रकार—इस प्रकार होना चाहिए कि उससे गेंद न केवल उसी दिशा में जाए, जिसमें खिलाड़ी उसे भेजना चाहता है, अपितु 'पीछा करने' के साथ ही यह रुक भी जाए। गेंद के प्रक्षेपण में 'पीछा करने' का भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है; क्योंकि इससे किसी अंश तक गेंद के जाने की दिशा निर्धारित होती है। अनेक खिलाड़ी विशेषकर सीखने वाले रैकेट को एक ओर से दूसरी ओर घुमाने का प्रयास करते हैं, जिससे गेंद भी कोर्ट के एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व की ओर आरपार चली जाती है। इसलिए झूलन रेखा को भली भाँति नियन्त्रण में रखना चाहिए, ताकि गेंद को अपेक्षित दिशा में ही भेजा जा सके। ध्यान रहे, यह क्षमता चिरकाल तक ध्यानपूर्वक किये गए अभ्यास से ही आ सकती है।

सीधी हथेली चालन (फोर हैण्ड ड्राइव)—सीधी हथेली चालन के लिए पैरों की अवस्थिति इस प्रकार होगी—शरीर दाएं पार्श्व-रेखा की ओर, हाथ और आंखें गेंद की तरफ, बायाँ पैर आगे की ओर इस प्रकार रखा जाए कि उसकी उंगलियां जाल की ओर और दाहिना पैर जो पीछे होता है, वह अगले पैर और जाल की [illegible] में एक रेखा बनाता है। सन्तुलन रखने के लिए दोनों पैर एक-दूसरे से एक फुट या अधिक फासले पर रहने चाहिएं। घुटने थोड़े मुड़े हुए होते हैं, दाहिना घुटना बाएँ से कुछ अधिक, जो कि गेंद को भारी समय तक सीधे होकर शरीर के भार को स्ट्रोक लगाने में सहायता देते हैं।

खिलाड़ी को ठीक ढंग से खड़ा होना आवश्यक है। जितना लम्बा झूलन बनता है, उतनी ही शक्ति और गति गेंद में आ जाती है।

खड़े होने के पश्चात खिलाड़ी को अपना हाथ पीछे की ओर फैलाना होता है और रैकेट को स्ट्रोक लगाने के लिए पकड़ना होता है। सीधी हथेली स्ट्रोक के लिए पूर्वी पकड़ ठीक रहती है। झूलन इस प्रकार किया जाता है कि रैकेट पीछे की ओर चला जाता है। पीछे की तरफ झूलन एक आवश्यक पूर्व क्रिया है, जिससे आगे की ओर झूलन में सहायता मिलती है, जिससे गेंद को संवेग मिलता है।

झूलन के साथ रैकेट को आगे लाते समय पहले कुछ ढीला छोड़कर आगे बढ़ाना चाहिए, ताकि स्ट्रोक पूरी शक्ति के साथ लग सके। हाथ को आगे बढ़ाना इसलिए आवश्यक है कि गेंद को शरीर के आगे अधिक से अधिक अन्तर पर मारना चाहिए।

उल्टी हथेली चालन (बैक हैण्ड ड्राइव)—दूसरा महत्त्वपूर्व स्ट्रोक है—उल्टी हथेली-चालन। इसके लिए पूर्वी उल्टी हथेली वाली पकड़ चाहिए। इसका सीधी हथेली वाली पकड़ से इतना ही अन्तर है कि दूसरे दस्ते पर एक चौथाई वामवर्त दिशा में हाथ घुमा कर रखा जाता है और अंगूठा थोड़ा ऊपर की ओर बढ़ाया जाता है।

पूर्वी उल्टी हथेली वाली पकड़ उस समय ठीक समझनी चाहिए, जबकि हाथ, कलाई और रैकेट—सब एक सीध में हों और रैकेट का सिरा कलाई से ऊपर पर्याप्त दूरी पर और कोहनी अन्दर की ओर हो। इस पकड का उद्देश्य है कि रैकेट ऐसी स्थिति में हो, जिससे गेंद को चपटे मूठ को ओर से मारा जा सके।

पकड़ के अतिरिक्त स्ट्रोक की अन्य सभी प्रक्रियाएँ वही हैं, जो कि सीधी हथेली वाले स्ट्रोक के लिए है। इसमें खिलाड़ी जाल की तरफ इस प्रकार खड़ा होता है कि उसके दाहिने पैर की उँगलियाँ जाल की ओर रहती हैं। साधारणतया इसमें पीछे की ओर जाने वाला झूलन सीधी हथेली वाले झूलन की अपेक्षा अधिक तेज होना चाहिए; क्योंकि इसमें प्रहार करने वाला कन्धा आगे की ओर रहता है। पहले की भांति शरीर का भार झूलन और पीछा करने के साथ ही पिछले पैर से अगले पैर पर बदल जाता है। पीछा करने की प्रक्रिया बाहर वाले कन्धे की ओर ऊपर को होती है।

चोप की प्रक्रिया

चोप—चोप एक प्रकार का चालन है, जिसमें कुल्हाड़ी से लकड़ी काटने की भांति रैकेट को चलाया जाता है। रैकेट का पूरा सिर गेंद पर नहीं मारा जाता, अपितु कोण बनाते हुए किनारा लगाया जाता है। इस कट के गेंद प्रतिद्वन्द्वी की कोर्ट में गिरने पर ऊपर को अधिक नहीं उछलती।

इस स्ट्रोक के लिए रैकेट की पकड़ पूर्वी सीधी हथेली तथा उल्टी हथेली के बीच की होती है। चालन की अपेक्षा इसमें पीछे का झूलन अधिक लम्बा होता है। रैकेट का सिरा कलाई के स्तर से ऊपर रहता है। कन्धे के स्तर से रैकेट नीचे की ओर इस प्रकार घुमाया जाता है जैसे कि लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी। साथ ही शरीर को भी इस प्रकार घुमाया जाता है कि कन्धा गेंद को ओर आता है और शरीर का भार बाएं पैर बदल जाता है। कलाई और अग्र-बाहू स्ट्रोक लगाने में विशेष काम आते हैं। अतः उन्हें स्वस्थ और सशक्त रखना आवश्यक है। अन्त में रैकेट से बाएं और कूल्हे के नीचे तक पीछा किया जाता है।

रैकेट की अर्द्ध क्षैतिज अवस्था के कारण गेंद की जो नीचे से कट मारा जाता है अथवा भूमि दी जाती है, उससे वह ऊपर की ओर जाती है और खेल की गति मन्द पड़ जाती है। इस कारण से चोप को जाल के पास दबा लेना सुगम है और यदि प्रतिद्वन्दी अच्छी 'वाली' मारने वाला हो तो वह इसका प्रत्युत्तर समुचित रूप से दे सकता है। अतः इसका आक्रमणात्मक रूप में न करके यथासम्भव रक्षात्मक ढंग से ही करना चाहिए।

क्रमशः





फैण्टम और डायना की शादी
घने जंगलों में ...फराका, फैण्टम का भयानक बाज उतरता है...
!
उसका मतलब है, वह आ रहा है!
चाचा वाकर*... डेविल ...हीरो... डायना!
हैल्लो रेक्स।
*चलते फिरते भूत के लिये।
डायना ...कैसा अचम्भा है! तुम कब तक रुकोगी?
घने जंगलों में दोबारा मिलना।
एम्बेसडर कारी ने मुझे एक सप्ताह की छुट्टी दी है। रेक्स अब तो तुम बहुत बड़े हो गये!
गुरान, मिस तगमा, तुम्हें दोबारा देख कर मैं कितनी खुश हूं!
डायना, धन्यवाद
हम भी बहुत खुश हैं।
क्या तुम उस से अब भी पूछते हो? तुम शादी के बारे में जानते हो।
GLUB
निश्चिन्त रहो, रेक्स!
बन्दर* तुम्हारे सम्मान में एक बहुत बड़ी दावत देने की योजना बना रहे हैं।
मुझे विश्वास नहीं होता कि मैं यहाँ हूं।
*नाटे कद के जहरीले मनुष्य।
कुछ खेलों के बाद मैं इसे वापस लाने का वायदा करता हूं।
तुम बन्दूक से शिकार मत करना
इस रास्ते में अधिक खेल हैं, तैयार हो जाओ, वहाँ उन झाड़ियों में एक हिरन है।
कमाल है! मुझे तो कुछ भी दिखाई नहीं देता।
दूसरा शिकारी भी देखता है...
वहाँ, वह जा रहा है, डायना।
!
सुन्दर निशाना, सीधे लक्ष्य की ओर।
?!
जब शिकारी शिकार कर लेते हैं...



गुमनाम है कोई ?

प्रतियोगिता

इनाम ३० रु०

(19)



आपको यह बताना है कि विनोद मेहरा के साथ यह किस कलाकार की तस्वीर है? और क्या दीवानी बात कह रही है ?

यदि एक से ज्यादा सही हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर-बराबर बांट दी जायेगी, अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजें :- गुमनाम है कोई प्रतियोगिता, ८ब, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-२। पहुंचने की अन्तिम तिथि: २२ अक्तू. ७७। एक पोस्टकार्ड पर एक हल भेजें।

पृष्ठ ८ से आगे

पूर्णिमा का मृत शरीर निढ़ाल पड़ा हुआ था। उसके गले पर अभी तक पाउडर जमा हुआ था।

श्रद्धा के पिता ने सलाह दी, 'मृत शरीर को सुबह तक रखना पड़ेगा, इसलिए बर्फ मंगवा लेनी चाहिये।'

स्वदेश कुमार झट से बोल उठा, 'बर्फ मंगवाने की कोई जरूरत नहीं।'

'क्यों ?'

'मैं पूर्णिमा की लाश पोस्ट-मार्टम के लिए भिजवाना चाहता हूं।'

'पोस्ट-मार्टम ?' कई आवाजें हैरानी में सुनाई दीं।

'हां।' स्वदेश कुमार दृढ़ता से बोला।

'आखिर क्यों ?'

'मैं अभी तक यह मानने को तैयार नहीं कि मेरी पत्नी हार्ट फेल हो जाने से मरी है।' इतना कह कर वह तेजी से मुड़ा और ड्राइंग-रूम की ओर चल दिया।

कुछ लोग आपस में काना-फूंसी करने लगे।

स्वदेश ने कोतवाली को फोन किया। इंस्पेक्टर आदर्श उसका दोस्त था। वह उसके साथ पढ़ता रहा था। कुछ देर घंटी बजती रही। आखिर किसी की ऊंघती हुई आवाज आई, 'हैलो ! कौन ?'

'मैं स्वदेश कुमार मित्तल बोल रहा हूं। इंस्पेक्टर आदर्श बाबू कहां हैं ?'

'स्वदेश जी ! मैं हवालदार भगवानदास हूं।' दूसरी ओर से आवाज आई, 'मैं आपको अच्छी तरह जानता हूं। आप अक्सर हमारे इंस्पेक्टर साहब से मिलने आया करते हैं। वह अपने क्वार्टर में आराम कर रहे होंगे। आप जानते ही हैं कि रात काफी जा चुकी है। हुक्म कीजिये ?'

'हवालदार साहब ! वह चाहे गहरी नींद में हों, तब भी उन्हें जगा कर कह दीजिये कि मैंने उन्हें फोन पर बुलाया है। मुझे उनसे बहुत जरूरी बात करनी है और इसी समय करनी है।'

'मैं जाता हूं। आप इन्तजार कीजिये।'

स्वदेश कुमार को पांच मिनट तक रिसीवर कान से लगाए रखना पड़ा।

'स्वदेश !' इंस्पेक्टर आदर्श की नींद से बोझिल आवाज आई, 'इतनी रात गए जगा दिया, क्या आफत आ गई ?'

'आदर्श ! मेरी मिसेज का देहान्त हो गया।'

'क्या ? कब ?' आदर्श की नींद पल भर में हवा हो गई, 'यह क्या कह रहे हो ? पूर्णिमा का देहान्त हो गया ? मुझे विश्वास नहीं आ रहा, स्वदेश !'

'विश्वास मुझे भी नहीं आ रहा, इसीलिए तो तुम्हें इतनी रात गए जगा कर बुलवाया है।'

'यह सब हुआ कैसे ?'

स्वदेश कुमार ने अपने दोस्त को पूर्णिमा की मौत का सारा किस्सा आदि से अन्त तक सुना दिया। उसने प्रार्थना-सी करते हुए कहा, 'आदर्श, मेरी मदद करो ! पूर्णिमा का निर्जीव शरीर अपने अधिकार में ले लो। हो सके तो जल्दी से पोस्ट-मार्टम करवा दो।'

आदर्श ने पूछा, 'तुम्हें क्या यह शक है कि भाभी की मौत हार्ट फेल हो जाने से नहीं हुई और हत्या की गई है ?'

'हां।' स्वदेश ने कहा, 'तुम पुलिस-वैन में पुलिस-डाक्टर को भी साथ लेते आना। वह प्रारम्भिक जांच करते ही कोई-न-कोई इशारा जरूर दे देगा।'

'मैं आ रहा हूं।' आदर्श ने कहा, 'तुमने बड़ी दुःखदायी खबर सुनाई है। सुनो ! जब तक मैं न पहुंचूं, लाश को उलटने-पलटने से रोकना।' इसके साथ ही फोन सम्पर्क कट गया।

स्वदेश कुमार ने रिसीवर क्रैडल पर रखा और पत्नी की लाश के पास आ खड़ा हुआ। उसने सब लोगों को लाश से थोड़ी दूर हटा दिया।

पौन घंटे बाद इंस्पेक्टर आदर्श अरोड़ा पुलिस-वैन में से निकला। उसके साथ पुलिस डाक्टर भी था।

पूर्णिमा की लाश देख कर इंस्पेक्टर आदर्श ने गहरा रंज प्रकट किया।

सुधा गुजराल को मालूम हो चुका था कि पुलिस को किस लिए बुलवाया गया था। उसे अपने दामाद पर पूरा भरोसा था, इसी कारण लाश की चीर-फाड़ के लिए उसने किसी तरह का विरोध न किया। सच तो यह था कि सुधा को भी इस बात पर विश्वास नहीं आ सका कि उसकी बेटी स्वाभाविक मौत मरी थी।

पुलिस डाक्टर ने लाश की प्रारम्भिक जांच शुरू कर दी।

सब लोग उत्सुकता से पुलिस कार्यवाई देखते रहे।

कुछ देर में ही पुलिस डाक्टर ने घोषणा कर दी, 'यह मौत दिल डूबने के कारण ही हुई है। इस पर भी यह देखना जरूरी है कि दिल डूबा तो क्यों डूबा ? इसलिए पोस्ट मार्टम करना जरूरी है। अभी मिसेज पूर्णिमा नवयुवती थीं। इनका बदन देख कर कोई भी नहीं कह सकता कि इन्हें कोई रोग था। ऐसे तन्दुरुस्त बदन में मजबूत दिल होता है। पोस्ट-मार्टम करना ही होगा।'

लाश को वैन में रखवा दिया गया।

शोक मनाने वालों का तांता-बंधा रहा। रिश्तेदार, पड़ोसी, दोस्त और हमदर्द लोग आते-जाते रहे।

जब काफी मातमपुर्सी हो चुकी तो स्वदेश को उसकी फर्म का डायरेक्टर अलग ले गया। उसने पूछा, 'क्या तुम सचमुच यह समझते हो कि मिसेज पूर्णिमा की हत्या की गई है ?'

'हंसती-खेलती और स्वस्थ बदन की मेरी पत्नी को कभी कोई बीमारी नहीं रही।' स्वदेश ने जोर देते हुए कहा, 'इससे मैं यही समझ पाया हूं कि पूर्णिमा की मौत कुदरती नहीं हुई।'

'तो फिर तुम्हें एक काम करना चाहिये।'

'कौन-सा काम ?'

'तुम्हें शायद मालूम ही नहीं कि अपने देश का सबसे मशहूर जासूस यहां आया हुआ है।'

'कौन ?' स्वदेश ने उत्सुकता से पूछा।

'जासूस बलजीत।' डायरेक्टर ने बताया, 'यहां जो फुटबाल-टूर्नामेंट हो रहा है, उसमें बलजीत बाबू भी अपनी टीम के कैप्टन की हैसियत से आए हुए हैं। तुम्हें चाहिये कि सारा किस्सा उन्हें जा सुनाओ।'

'क्या अभी चलें ?'

'मेरे विचार में तो देर करना मुनासिब नहीं। लाश को तुम पोस्ट-मार्टम के लिए भिजवा ही चुके हो। अभी चीर-फाड़ का काम शुरू नहीं हुआ होगा। उचित यही रहेगा कि बलजीत बाबू लाश को पोस्ट-मार्टम से पहले देख लें।'

'क्या वह फुटबॉल की प्रतियोगिता का मोह छोड़ कर हमारी मदद करने को तैयार हो जाएंगे ? इतने बड़े जासूस को मनाना मजाक की बात तो है नहीं।'

'तुम उनके स्वभाव को नहीं जानते, तभी ऐसी बात कह रहे हो। जब उन्हें मालूम होगा कि यह हत्या का मामला है, तो

वह अंधेरे-सवेरे की भी परवाह नहीं करेंगे और फौरन हमारी मदद करने को तैयार हो जाएंगे।' डायरेक्टर ने कहा, 'अभी रात के साढ़े ग्यारह बजे हैं और वह अपने होटल में ही मिल जाएंगे।'

'कहां ?'

'चित्रा होटल में। उनके साथी अनिला और राजीव भी आए हुए हैं।'

'आइये, चलें।'

दोनों कार में बैठ कर 'होटल चित्रा' पहुंच गए।

जासूस बलजीत अभी सोया नहीं था। वह स्वदेश कुमार मित्तल और उसके डायरेक्टर से बड़े तपाक के साथ मिला। स्वदेश का दुखड़ा उसने बड़ी हमदर्दी से सुना। तुरन्त वह लाश का मुआयना करने को तैयार हो गया।

थोड़ी देर बाद वे जनरल हॉस्पिटल पहुंच गए।

इंस्पेक्टर आदर्श भी वहीं मौजूद था। बलजीत के जासूसी कारनामों की धाक उस पर भी जम चुकी थी। उसने बड़ी गर्मजोशी के साथ बलजीत से हाथ मिलाया।

'पोस्ट-मार्टम शुरू हो गया ?' बलजीत ने पहला सवाल पूछा।

'अभी नहीं। बस, पन्द्रह मिनट में शुरू हो जाएगा।' इंस्पेक्टर ने बताया।

'तब तो हम ठीक समय पर आ गए।' जासूस बलजीत ने कहा, 'पोस्ट-मार्टम से पहले मैं मिसेज पूर्णिमा की लाश देखना चाहता हूं।'

'आइये, लैबॉरेटरी में लाश रखी है। देख लीजिये।'

वे तीनों लैबॉरेटरी में आ गए। वहां एक डाक्टर अपने दो सहायकों के साथ पोस्ट-मार्टम की तैयारी कर रहा था।

इंस्पेक्टर ने डाक्टर से जासूस बलजीत का परिचय कराया तो डाक्टर ने हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। उसने एक लम्बी मेज की ओर इशारा करते हुए कहा, 'वह चादर से ढकी हुई लाश मिसेज पूर्णिमा की है। आप अच्छी तरह तसल्ली से लाश का मुआयना कर लीजिये। उसके बाद ही हम चीर-फाड़ शुरू करेंगे।

बलजीत उस मेज के पास चला गया। बलजीत ने देखा कि लाश के चेहरे पर अभी तक जिन्दा औरत का रूप झलक रहा था। बदन पर भी उसे किसी तरह का कोई घाव दिखाई न दिया।

कुछ पल बलजीत सोच में डूबा रहा। आखिर वह लाश पर झुक गया।

पूर्णिमा की गर्दन पर जो पाउडर की परत चढ़ी हुई थी, उसने बलजीत को अचम्भे में डाल रखा था। उसने जेब में से रूमाल निकाला और धीरे-धीरे गर्दन पर से पाउडर हटा दिया। जिस जगह पाउडर की परत थी, अब वहां नन्हा-सा निशान नजर आने लगा। वह निशान ऐसा था, जैसे मच्छर के काटने पर बन जाया करता है।

बलजीत ने पूर्णिमा की बगलें देखीं। इसके बाद पैरों के तलुए देखे। लाश की गर्दन पर उंगली फेरी। स्पष्ट था कि दम घोंट कर पूर्णिमा को नहीं मारा गया था।

लगभग दस मिनट तक बलजीत ने लाश का मुआयना किया। इसके बाद उसने डाक्टर से कहा, 'आपने मुझे लाश देखने की इजाजत दी, इसके लिए मैं आपका शुक्रगुजार हूं। डाक्टर साहब, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि पोस्ट-मार्टम जरा सावधानी से कीजियेगा। आशा है कि सुबह तक लाश आप वारिसों को सौंप देंगे और पोस्ट-मार्टम की सही-सही रिपोर्ट भी दे देंगे।'

'जरूर !' डाक्टर ने कहा।

इंस्पेक्टर आदर्श, बलजीत, स्वदेशकुमार और उसकी कम्पनी का डायरेक्टर हास्पिटल से बाहर निकल आए।

स्वदेश कुमार के दिल में खुदबुद हो रही थी। वह बलजीत की राय जानने को बेचैन हो रहा था। जब उससे रहा न गया तो उसने पूछ ही लिया, 'आपने मेरी पत्नी की लाश देख कर क्या अनुमान लगाया ?'

'मिस्टर मित्तल ! मैं तब तक अपनी राय नहीं देना चाहता, जब तक पोस्ट-मार्टम की रिपोर्ट हमारे सामने नहीं आ जाती।'

'कारण ?'

'पहले से कोई गलत धारणा बना लेना मेरे विचार में कोई अच्छी बात नहीं होती।'

'कुछ तो इशारा आप कर ही सकते हैं ?'

'क्यों नहीं ! इतना मैं अब भी कह सकता हूं कि मिसेज पूर्णिमा की मौत हार्ट फेल से नहीं हुई।'

इन्स्पेक्टर आदर्श भी चौंक पड़ा। पुलिस डाक्टर ने सुधा के बंगले में लाश देखने के बाद तो स्पष्ट शब्दों में कहा था कि मौत दिल डूबने से हुई थी।

बलजीत बोला, 'इन्स्पेक्टर साहब ! आप पोस्ट-मार्टम की रिपोर्ट कब तक हमें दिखा सकेंगे।'

'सुबह होते ही मैं रिपोर्ट भी ले आऊंगा और लाश भी।'

अब बलजीत ने स्वदेश कुमार से पूछा, 'मिस्टर मित्तल ! आप कहां रहते हैं ?'

'मेरा अपना घर टाउन हाल रोड पर है। आज रात मैं अपनी सास के बंगले में रहूंगा जो स्टेशन रोड पर है। डी ब्लाक में बंगला नम्बर २८७ है। इन्स्पेक्टर साहब आपको सवेरे रिपोर्ट देंगे। मैं भी पहुंच जाऊंगा।'

'यही ठीक रहेगा।'

इसके बाद बलजीत को वे 'चित्रा-होटल' तक छोड़ आए।

सुधा गुजराल के बंगले में आने के बाद स्वदेश कुमार को नींद न आई। वह बलजीत की बात पर दिमाग लड़ाता रहा कि पूर्णिमा की मौत दिल डूबने से नहीं हुई तो कैसे हुई ?

शेष आगामी अंक में

बन्द करो बकवास



जाओ रे जोगी तुम जाओ रे, यह है प्रेमियों की नगरी…
बन्द करो बकवास। क्या पुराने-पुराने गाने गा रही हो। गाना है तो कोई नया सा गाओ जैसे चल संन्यासी मन्दिर में…
दिलरुबा आ मेरी बांहों में आ…
बन्द करो बकवास इश्क के नशे में तुम खुदकशी करना चाहते हो क्या ?
अफसाना लिख रही हूँ दिले बेकरार का… आंखों में रंग भरके तेरे इन्तजार का।
बन्द करो बकवास, मैं बम्बई दफ्तर के काम से जा रहा हूँ, तुम्हारे लिये शोपिंग करने नहीं जो तुमने एक मील लम्बा लिस्ट बना दिया है।

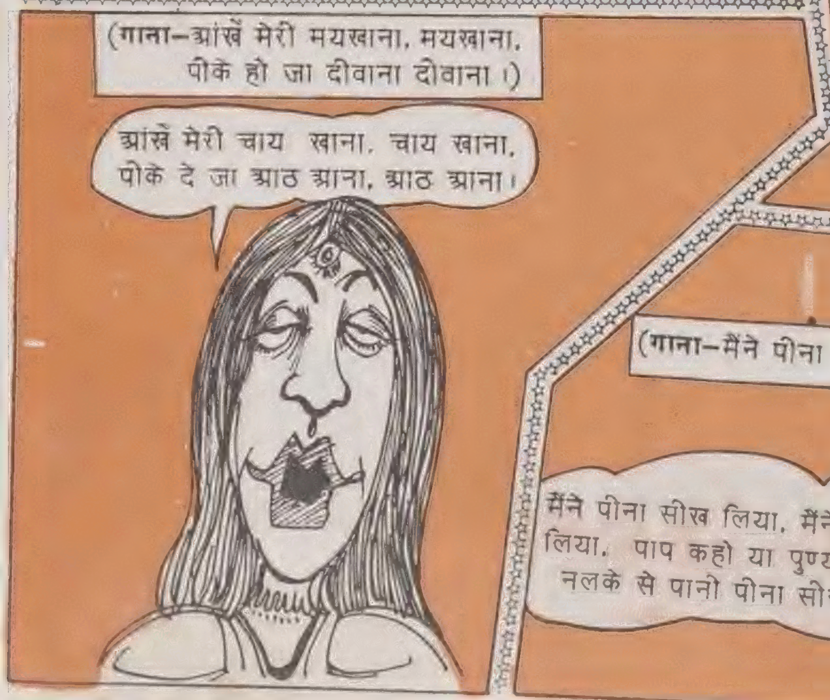
नशाबन्दी और फिल्मी गीत

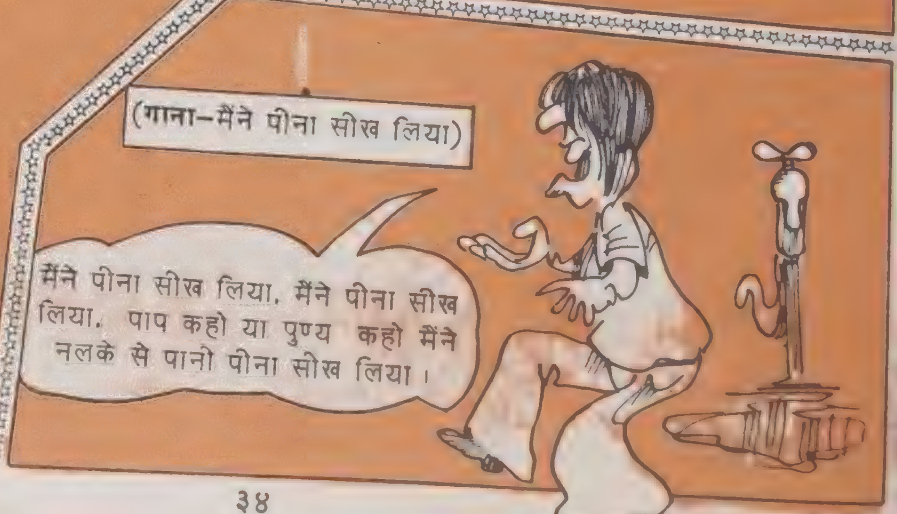
जब पूरी नशाबन्दी देश भर में हो जायेगी तब उन फिल्मी गानों का क्या हश्र होगा जो शराब पर आधारित हैं ? उनमें भी परिवर्तन करना पड़ेगा । परिवर्तन करने के बाद नये रूप में गाने कैसे लगेंगे ? जरा एक झलकी देखिए-












(गाना–मुझको यारो माफ करना मैं नशे में हूँ।)
मुझको यारो माफ करना मैं मलेरिया के दौरे में हूं।
(गाना–झूम बराबर झूम शराबी)
न हरम में सुकू मिलता है, न बुतखाने में, चैन मिलता है तो हॉकी तेरे मैच देखने में
(गाना–जाहिद शराब पीने दे मस्जिद में बैठ कर……
जाहिद ७७ पीने दे मस्जिद में बैठ कर या वह जगह बता दे जहां गर्मी न हो।
(गाना–न पीना हराम है न पिलाना हराम है)
न सीना हराम है न सिलाना हराम है, सिलवा के सिलाई न देना हराम है।
NEW TALKIES
(गाना–साकी हो, हाथ में हो शेरों की किताब और बगल में गाती हुई हसीना।
साकी हो, हाथ में हो नून वाले शो की टिकट और बगल में प्रोग्राम विविध भारती।

अर्थ अनर्थ

पुरुषोत्तम कुमार चटर्जी—उन्नाव
चीनी के बर्तन बेचने वाले एक दुकानदार ने अपने नौकर से कहा—
अरे ऐसे क्या प्लेटें दिखा रहा है, बाबूजी को पटककर दिखा।

● किसे पटकना है प्लेटों को या बाबू जी को साफ-साफ बोलो।

जसवंत सिंह—मदनगंज

● भगवान के लिए फटा पुराना कपड़ा दो।
मनुष्य की बात तो अलग रही क्या भगवान की भी ऐसी हालत हो गई है कि वह फटे पुराने कपड़े पहनने लगा।

राजकुमार शर्मा—सुनगढ़ी (पीलीभीत)

● जीजी, आज तो मैं आपके हाथ की बनी हुई सब्जी ही खाऊंगा।
प्याज का रेट ढाई रुपया किलो है इसलिए हाथ की सब्जी बनने लगी है, क्या महंगाई के कारण?

नरेश चाखला—दिल्ली

● एक पड़ोसन दूसरी पड़ोसन से—
जब मैं आम का अचार डालूंगी, तो तुम्हारा भी डाल दूंगी।
मुझे अपना नहीं आम का ही अचार डलवाना है।

ओंकार सिंह छाबड़ा—जयपुर

● रेलवे स्टेशन पर जहां तुम प्रदर्शन की बात कर रहे हो, वहां मैं लेट गया था।

रेल के इंजन के सामने लेटे होगे? पर मरने वालों में तुम्हारा नाम तो नहीं है।

नन्द किशोर—विराटनगर (नेपाल)

● बाप बेटे से—

जब मैं तुम्हारी उम्र का था तो बिल्कुल झूठ नहीं बोलता था।
किस उम्र से झूठ बोलना शुरू करें? बेटा यह सोचकर चक्कर में है।

केवल प्रकाश—काशीपुर

● यार नौकरी खटाई में पड़ गई है।
और इधर-उधर देखो तो चाट पकौड़ी वाला कोई भी नहीं है।

ओमप्रकाश वर्मा—करनाल

● स्टेशन का बुकिंग क्लर्क, खिड़की पर खड़े एक देहाती से—

केदारनाथ, बद्रीनाथ, पर तुम टिकट मांग रहे हो प्रकाशनाथ के लिए। यह प्रकाशनाथ कहां है।



वह बाहर खड़ा है जी, सामान के पास।

मो० अशरफ अली खां—पटना

● खड़खड़ाहट की आवाज सुनकर मेरे कान खड़े हो गये?
क्या खड़खड़ाहट इतना बड़ा अफसर है कि कान को खड़ा होना पड़े।

नीलू बजाज—नरवाना, जींद

● इस बार सम्भल कर निशाना लगाना, तुम्हारा पहला पत्थर मेरे सर में लगते-लगते बचा है?
मतलब है इस बार निशाना न चूके और सीधा सर पर पड़े।

रामकुमार शर्मा—रेवाड़ी

● एक नौकर ने अपने सेठ जी को फोन किया। सेठ जी उड़द की दाल का बहुत स्टाक पड़ा है और मार्केट में रेट गिर गया है क्या करूं?
दाल का रेट गिर गया है तो उसे बेच दो।

● और सेठ जी, सेठानी जी सीढ़ियों से गिर गई हैं?
उसे भी बेच दो।

स्वतन्त्र कुमार केसरी सिंह

● सेठ जी ने फोन पर अपने नौकर से कहा, मैं आधा ड्रम पैट्रोल भेज रहा हूं। अभी मेरी बात का अर्थ समझ रहा है ना?
जी हां—और इस अर्थ का अनर्थ नौकर यह समझा कि फोन के नीचे एक खाली ड्रम रखकर बैठ गया।

सुरेश शर्मा—रमेश नगर, नई दिल्ली

● मां, बेटे से : बेटा, अमरूद में कीड़े देखकर खाना?
क्या अमरूद नहीं खाना है।

मनीश माथुर—बाँसवाड़ा

● बिल्ली रास्ता काट जाए तो अशुभ माना जाता है?
चाहे बिल्ली के पास चाकू कैंची कुछ भी न हो।

मनोज भगत—आरा

● एक आदमी ने अपने नौकर से कहा, देखना बाहर कौन है?
नौकर ने उत्तर दिया—बाबू मेहतर है।

सुरेन्द्र कुमार—कैथल

● सुनील गवास्कर ने धक्का मारा? मचान पर चढ़कर मारा, या नीचे से ही बन्दूक मार दी?

अष्टोनियों पादरी—लुधियाना

● आपकी पेंट बहुत ढीली है। और पहन लीजिये?
एक और पहनने से क्या यह ढीली नहीं रहेगी।

अशवनी ठंडा—लुधियाना

● शेर जंगल में रहता है, मगर कहां? गुफा में?
जी नहीं, मगर पानी में रहता है।

अर्थ-अनर्थ
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चना कुरमुरा

'रोगी को बुखार मटर खाने से फिर दुबारा चढ़ गया है,' डाक्टर ने रोगी का परीक्षण कर बताया ।

बाहर निकलते समय उसके साथ आये कम्पाउण्डर ने पूछा, 'सर, आपको कैसे पता चला ?'

डाक्टर ने मुस्करा कर कहा, 'मैंने जमीन पर मटर के छिलके पड़े देखे थे ।'

अगले दिन कम्पाउण्डर जब अकेला इंजेक्शन लगाने आया, तब मरीज की हालत अधिक खराब थी । वह भागा-भागा डाक्टर के पास आया 'डाक्टर साहब, जल्दी चलिये । आज मरीज एक कुत्ता खा गया है ।'

'तुम्हें कैसे पता कि मरीज कुत्ता खा गया है,' डाक्टर ने बौखला कर पूछा ।

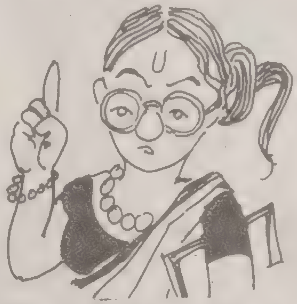
'क्योंकि उसके खाट के पाये में कुत्ते की जंजीर बंधी है और कुत्ते का कहीं पता नहीं ।'

●

एक युवा महिला-ज्योतिषी अपनी एक ग्राहक तरुणी से बोली—'मैं तुम्हारा हाथ देखकर बताती हूं कि तुम्हारा विवाह होने वाला है ।'

'बहुत खूब !' लड़की मुस्कराई ।

ज्योतिषी-महिला ने फिर ग्राहक का हाथ देखा और पूछा—'अच्छा तुमसे अमुक व्यक्ति प्रेम करता है न ?'



'अरे,' युवती सकपका गई, 'हस्तरेखा में यह बात तो प्रकट नहीं हो सकती !'

'हस्तरेखाएं,' ज्योतिषी महिला विस्मय एवं मन्द मुस्कराहट के साथ बोली, 'पर रेखाएं देखकर यह बात कही ही किसने है ? तुम वही अंगूठी तो पहने हो, जो तीन सप्ताह पहले मैंने उस व्यक्ति को वापस की थी ।'

एक व्यक्ति ने अपनी वसीयत में अपने तीन पुत्रों को एक-एक हजार रुपये इस शर्त पर दिये जाने का उल्लेख किया कि जिस वक्त उसे दफनाया जाय, उस वक्त प्रत्येक पुत्र उसकी कब्र में सौ रुपये रखे । दो पुत्रों ने ऐसा ही किया किन्तु तीसरे ने ३०० का चैक लिखकर कब्र में रख दिया और नकद दो सौ रुपये अपनी जेब के हवाले किये ।

●

डाक्टरों की सभा में डा० श्रीवास्तव ने डा० वर्मा से कहा, 'मैंने परसों सेठानी धनकंवर का ऑपरेशन कर दिया है और वह सफल रहा है । एपैन्डिक्स निकालने का ।'

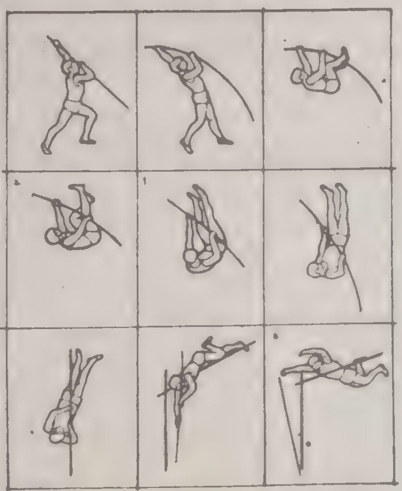
एक आंख दाबकर डा० वर्मा बोला, 'अच्छा ! उन्हें शिकायत किस बात की थी ?'

●

'आपको समुद्र-यात्रा बहुत लाभ पहुंचायगी। जल्दी से जल्दी प्रबन्ध कर लीजिये ।' डाक्टर की सलाह थी ।

'कोई लाभ नहीं, डाक्टर ! मेरी पत्नी तैरना जानती है !'

ऊंची छलांग व गुमनाम के परिणाम



सही क्रम
विजेता : रजनीश कुमार अनजाना
शीश महल मुरादाबाद



विजेता :- खेमचंद्र शर्मा बुलन्दशहर (उ०प्र०)
दीवानी बात :- मुझे देखकर शर्माती क्यों हो?
मैं किसी से नहीं कहूंगा तुम सब्जी बेचती हो ।



एक ही फिल्म से
फिल्म
"सारे जहां से अच्छा"
★ सुनील दत्त
★ शशि कपूर
★ रीना राय

खेल खेल में

मनोज कुमार गुप्ता—गाजियाबाद

प्र० : लॉनटेनिस का सबसे अच्छा खिलाड़ी कौन है ? तीन के नाम का उत्तर आपने यह दिया था । फ्लेमिंग डेल्ड, स्वेंडप्री तथा लीसुमिरात । ये तीनों बैडमिंटन के खिलाड़ी हैं।

उ० : वास्तव में प्रश्न ही बैडमिंटन के बारे में था । गलती से लॉन टेनिस छप गया । भूल के लिए क्षमा—पाठक कृपया नोट कर लें । आपका धन्यवाद ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सैयद अमजद खान—सीकर

प्र० : मोहम्मद अली (क्ले) ने सन्यास ले लिया है क्या ? कब से और क्यों ?

उ० : पहले सन्यास की घोषणा कर ली थी परन्तु बाद में वह रिंग में उतर पड़े । और आजकल फिर विरोधियों को वह पछाड़ने में लगे हैं । मुक्केबाजी भी एक सनक की तरह होती है जो पिटने पर ही छूटती है ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

बिना रानीदास—नेपाल

प्र० : वर्तमान क्रिकेट चैम्पियन कौन है ? कृपया नाम बतायें ।

उ० : इस समय सर्वश्रेष्ठ टीम वेस्ट इंडीज की है । आस्ट्रेलियाई क्रिकेट के बुरे दिन शुरू हो गये हैं ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

विनोद कुमार श्रीवास्तव मधु—कानपुर

प्र० : क्या यजुवेन्द्र सिंह, हनुमन्त सिंह का लड़का है ?

उ० : नहीं ।



...खेल हैं । क्रिकेट तो जेन्टलमैन गेम है । मजाक में क्रिकेट को अफीमचियों का खेल या जनाना खेल भी कहते हैं । २२ बेवकूफ मैदान में होते हैं और ५०००० बेवकूफ पवेलियन में । राष्ट्र का समय नष्ट करने वाला और कोई खेल नहीं है । पाँच दिन का मैच खेलने के लिये पेंट ही माकूल है । जहाँ तक फुटबाल हाकी का प्रश्न है वह पाँच दिन छोड़िये । यदि दो टीमों से क्रिकेट की तरह एक दिन पांच या छः घंटे खिलाया जाये तो खिलाड़ियों को अस्पतालों के एमर्जेंसी आक्सीजन टेंटों में ले जाना पड़ेगा ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

किशन अग्रवाल—रांची

प्र० : इस समय क्या घावरी भारत के अच्छे आल राऊंडर हैं ? नई गेंद से घावरी की गति सीमा बतायें ?

उ० : हां, जैसे गरीबों के लिए चने बादाम होते हैं वैसे ही हमारी टीम के लिये घावरी आलराऊंडर हैं । उनकी गति मापी तो नहीं गयी । इतना जरूर कहा जा सकता है कि अस्सी मील से ज्यादा नहीं होगी । इससे बहुत कम ही होगी ।

रमेश कुकरेजा—इन्दौर

प्र० : भविष्य में भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान बिशन सिंह बेदी ही रहेंगे या किसी और को इस पद हेतु मौका दिया जायेगा ?

उ० : हमेशा कौन कप्तान रह सका है । कभी न कभी तो हटना ही पड़ता है ।

महावीर वोहरा—सानारा

प्र० : भारत में हाकी की स्थिति बुरी क्यों हो गयी ?

उ० : बुरी तो नहीं हुयी । हाँ, यह जरूर हुआ कि दूसरे देशों की टीमों में लगातार सुधार आता गया । वह हमसे आगे बढ़ गये हम वहीं के वहीं रह गये ।

सिद्धार्थ तापड़िया—मुजफ्फरनगर

प्र० : पटौदी और वाडेकर, आपकी राय में कौन सा कप्तान श्रेष्ठ है ?

उ० : दोनों ही कोई बहुत श्रेष्ठ कप्तान नहीं थे । पटौदी टीम के खिलाडियों से अलग-थलग रहते थे और वाडेकर टीम में अनुशासन व एकता रख सके थे । इतना जरूर है कि वाडेकर बहुत भाग्यशाली है ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

विकास कुमार—तिनसुकिया

प्र० : भारत ने कौन-से खेल में संसार में अब तक रिकार्ड बना रखा है ?

उ० : हाकी में सात ओलम्पिक गोल्ड मैडल ही भारत का विश्व रिकार्ड है ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

मनोज कुमार—लखीमपुर

प्र० : भारत का सबसे अच्छा क्रिकेट खिलाड़ी कौन है ?

उ० : बैटिंग में गवास्कर, बॉलिंग में बेदी और विकेट कीपिंग में किरमानी ।

क्रिकेट समाचार

क्रिस ओल्ड द्वारा ३७ मिनट में शतक ।

वस अगस्त १९७७ को इंग्लैंड के तेज गेंदबाज आल राउण्डर क्रिस ओल्ड (दो बार भारत आ चुके हैं) ने वारविक शायर के विरुद्ध यार्क शायर की ओर खेलते हुये ३७ मिनट में शतक मारा । उन्होंने १३ चौके और पांच छक्के मारे । प्रथम श्रेणी मैच में सबसे जल्दी शतक बनाने का रिकार्ड पर्सी फेंडर का है जिसने १९२० में ३५ मिनट में शतक बनाया । इस प्रकार ओल्ड दूसरे नम्बर पर रहे ।

मदनलाल होतवानी—रायपुर

प्र० : भारत और अफ्रीका के बीच क्रिकेट मैच कब और कहाँ हुआ था ?

उ० : भारत अफ्रीका के बीच टैस्ट मैच नहीं हुये ।

प्र० : फुटबाल और हॉकी का खिलाड़ी हाफ पेंट पहनता है जबकि क्रिकेट का खिलाड़ी हाफ पेंट नहीं पहनता ।

उ० : फुटबाल और हॉकी बहुत तेज गति के खेल हैं । (ऊपर देखें)

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

कोकाकोला

बिदाई प्रतियोगिता

जैसा कि ग्रापको पता है ग्रब कोका कोला नहीं मिलेगा। कोक का लायसेंस रद्द कर दिया गया है। ग्राप कोक की याद में एक विरह गीत लिखिये। गीत या शेर चार लाइनों का हो। सर्वश्रेष्ठ रचना को तीन बोतल रूह ग्राफजा का मूल्य पुरस्कार।

हल पहुंचने की अन्तिम तिथि—२२ अक्तू

पहेलियां

१. गिलहरी केवल बादाम व ग्रखरोट खाती है खुरमानी की गिरी क्यों नहीं खाती?

२. रात को बारह बजे के बाद नहाने पर टी.बी. होने की ग्राशका क्यों रहती है?

३. सेम्बायड कुत्ता केवल रात को भौंकता है दिन को क्यों नही भौंकता?

सही हल

१. कौन कहता है गिलहरी खुरमानी नहीं खाती?

२. कौन कहता है बारह बजे के बाद नहाने पर टी० बी० होती है?

३. कौन कहता है दिन को सेम्बायड कुत्ता नहीं भौंकता?

डाक्टर ने रोगी को डाटा, 'कुछ देर रुक जाग्रो। ग्रभी मैंने तुम्हें मुंह खोलने ग्रौर ग्रा-ग्रा करने को नहीं कहा था।'

'डाक्टर साहब, मुझे पता है। यह ग्रापकी नर्स को देखकर ग्रनजाने हो गया।'

कार्टून बनाइये प्रतियोगिता

5 रु इनाम

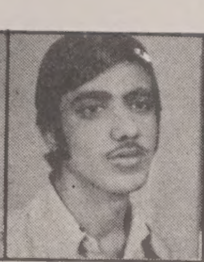
अन्तिम तिथि - २२ अक्तू

निम्न शीर्षक पर कार्टून बनाइये

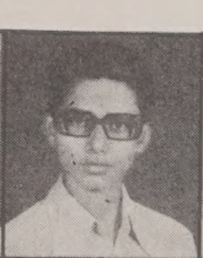
दुकानदार (ग्राहक महिला से) मैंने एयर कंडीशनर नहीं लगा रखा है। मेरी दुकान तो ग्राहकों द्वारा कीमत सुन छोडी गई ठडी सांसों से ही एयर कंडीशंड जैसी बनी रहती है।



अजय कुमार मिश्रा राम नारायण मि० ट० शेरघाटी (गया) १५ वर्ष फिल्म देखना तथा क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना।



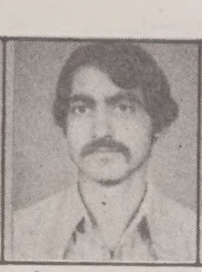
राकेश बाहरी राजेन्द्र नगर, रोड नं०६/क, पटना, १६ वर्ष, टिकट जमा करना, पुस्तकें पढ़ना, पत्र व्यवहार करना व दोस्ती करना।



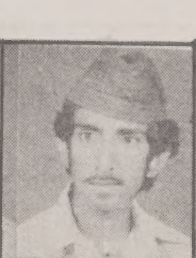
विश्व मोहन चौधरी मन्न क्वा. नं० ६४, एल. आई जी. ककड़ बाग कालोनी, पटना-२० १३ वर्ष, रचना लिखना, पत्र व्यवहार करना।



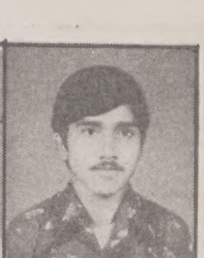
बसन्त कुमार मनचिन्दा पुत्र श्री० राम टाल लकड़ी, बाबरा चौक, रोहतक (हरियाणा) १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना।



अवनीन्द्र कुमार, ६-बी २३, रमेश नगर, नई दिल्ली-१५, २२ वर्ष लड़के तथा लड़कियों से पत्र व्यवहार करना, फिल्में देखना, आवारा घूमना।



विश्वनाथ दास 'विगा' दास स्टूडियो गार्जबिगाज नेपाल, पा० कुनौली जिला सहर्षा, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फरमाइश भेजना।



अनिल भटनागर, ए/४५ अशोक विहार, दिल्ली २० वर्ष, प्यार करके उसे निभाना दीवाना तथा अन्य पत्र पत्रिकायें पढ़ना, फिल्में देखना।



केशव लाल श्रेष्ठ ५६८० भोंछे काठमाडो (नेपाल), १५ वर्ष, चिल्ली के साथ पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना व फुटबाल खेलना।



प्रीतम इन्द्र सगाव १६, प्रेम नगर, नई दिल्ली २० वर्ष, पत्र-मित्रता और नावल पढ़ना, फिल्में देखना, चाय बना कर पिलाना, टिकट संग्रह करना।



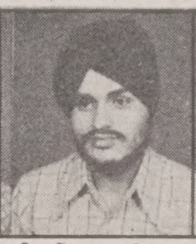
प्रकाश कुमार साह जूनी शुक्रवारी, नागपुर-२ १६ वर्ष दीवाना पढ़ना, बास्केट बाल खेलना, गणित में रुचि रखना बड़ों की सेवा करना।



रूपचन्द तिवाड़ी मारफत लाल तिवाड़ी, पारीक चौक नया शहर, बीकानेर, (राज०) १७ वर्ष, वाद-विवाद करना, पढ़ाई करना, दोस्ती करना।



सुधीर ग्रोवर, ए, १०७ बी, फेज II, अशोक विहार, दिल्ली-५२, १४ वर्ष, एक्टिंग करना, गाने गाना पत्र-मित्रता तथा दीवाना पढ़ना।



हरजिन्द्र सिंह ७२/२, ई० गु० ब० नगर, पटपड़ गंज रोड, दिल्ली-५१, २१ वर्ष, सबसे घोखा खाना, दूसरों की बातों पर विश्वास करना।



विमल कुमार ३४/ए, सीको कालोनी, अशोक, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, मित्रों से मिलना टिकट संग्रह करना, बड़ों का आदर करना।



गविन्द कुमार महतो नवयुवक छात्र संघ महनाडोह, पोस्ट बोसजोड़ा, जिला धनबाद, बिहार-८२८१०१, १६ वर्ष, भटकने लोगों को राह दिखाना।



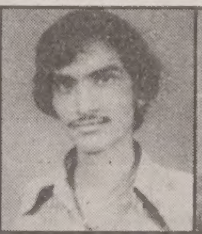
विनय बद्रूमाल काकू, मस्का-साथ नन्दीपुरा, इतवारी, नागपुर ४४०००२ १३ वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना, किताब पढ़ना।



आनन्द भाटिया, आबागढ़ कमरा नं० ६ नैनीताल मल्ली-ताल २० वर्ष, दादागीरी करना दीवाना पढ़ कर लोगों हंसना और हंसाना।



नरेन्द्र कुमार सोनी ४५६/६, नया बाजार अजमेर १८ वर्ष दूसरों को बेवकूफ बनाना दीवाना पढ़ना फोटोग्राफी करना तथा घूमना।



कल्याण जैन द्वारा ३५, होलसेल क्लथ मार्केट, गांधीबाग, नागपुर-२ २१ वर्ष, पत्र-मित्रता फिल्म देखना, चुटकुले सुनाना।



मनमोहन आनन्द "दीवाना" महराजी रोड नं० ४, १६ वर्ष, सिनेमा देखना गाना सुनना, टिकट संग्रह करना, कहानियाँ तथा दीवाना पढ़ना।



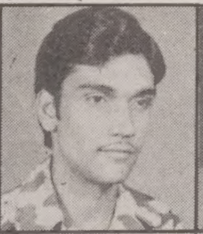
अशोक जैन अभय ओसवाल लुधियाना माधोपुरा कुर्बान १ २१ वर्ष किताबें पढ़ना तथा स्कूटर चलाना, फिल्में देखना गाने गाना



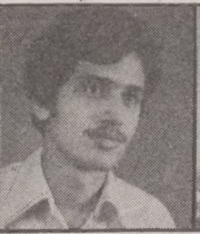
प्रदीप कुमार सर्राफ, २३-ए, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७ १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना एवं पत्र व्यवहार करना, फोटो-ग्राफी करना।



विष्णु खंडेलवाल, होमगार्ड आफिस के सामने, २० वर्ष, लड़कों से मित्रता करना, रेडियो सीलोन के हर कार्यक्रम में हिस्सा लेना।



इरशाद अली, १ जवाहर मार्ग कट नं० ८ बदनापर जि. धार, (म०प्र०), १६ वर्ष, वालीबाल खेलना, हंसना और हंसाना, दीवाना पढ़ना।



रेवती रमन सैनी द्वारा श्री प्र.एन.च सैनी, डी. एस. पी. नारायण गढ़-१३४२०३, जि. अम्बाला, १६ वर्ष, पत्र मित्रता स्केटिंग, मुक्केबाजी, घूमना।



अनूप कुमार जैन बड़ा बाजार आष्टा, जि० सीहोर (म प्र) १६ वर्ष, मोटर साईकिल चलाना, फरमाईश भेजना और सुनना।



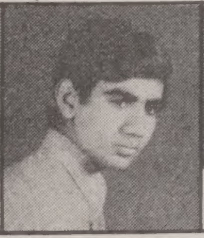
विजय गुप्ता 'विवश' कुमार प्रोविजनल स्टोर्स, दुर्ग (म.प्र.) २२ वर्ष, दीवाना चुरा कर पढ़ना, दिन भर नेताओं की तरह डींग मारना।



नरेन्द्र कुमार हालदार, नियर हनुमान मन्दिर देवरिया ग्राम (देवरिया) १६ वर्ष, जासूसी उपन्यास पढ़ना, फिल्म देखना, रेडियो सुनना।



अशोक कुमार शर्मा आनन्द सोडा फैक्टरी, १८ वर्ष, मोटर साईकल चलाना, दीवाना पढ़ कर लोगों को हंसाना गप्पें मारना।



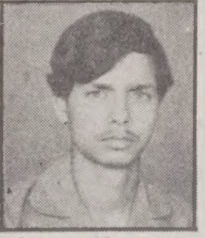
दलीप रसवन्ता, २०१६, उपकार काटेज, प्रहलाद नगर, मेरठ १६ वर्ष दीवाना में पेन फ्रेंड्स में फोटो छपवाना, पत्र मित्रता करना।



कृष्ण कुमार शर्मा, २१६ न्यू आफीसर्स कालोनी, बुलन्द-शहर, २० वर्ष नेपाली युवतियों से मित्रता करना डाक-टिकट संग्रह करना।



भगवान सिंह सोलंकी मीना बाच क०, माधवगंज, लश्कर, ग्वालियर, २१ वर्ष दीवाना पढ़ कर हंसना राजेश खन्ना की एक्टिंग करना।



शशि कपूर मालोनिया 'प्रिन्स' १६ ४७ पीर कल्यानी मोती लाल नेहरू रोड आगरा-४, (उ० प्र०) १६ वर्ष, लड़के-लड़कियों से पत्र-मित्रता।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________________
पता ____________________
आयु ________ शौक ________

तेज प्रैस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

प० कृष्णकांत शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र स्व०
भवन प० हंसराज शर्मा

१७ अक्तूबर से २३ अक्तूबर ७७ तक



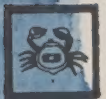
मेष : इन दिनों कोई अप्रिय घटना हो सकती है, जिससे मानसिक परेशानी होगी, फिर भी यह सप्ताह है लाभप्रद, और आप परिस्थितियों पर नियन्त्रण पा सकोगे, कठिनाइयों के बाद सफलता मिलेगी।



वृष : थोड़ा संघर्षमय होने पर भी सप्ताह पर्याप्त अच्छा ही है, शत्रुओं एवं बाधाओं के साथ-साथ आप उलझनों पर भी काबू पा लोगे, घरेलू-वातावरण भी पहले से सुधरेगा और कामकाज की स्थिति अच्छी हो जायेगी।



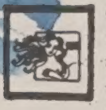
मिथुन : भाग्य का सहारा मिलेगा और परिश्रम का फल पूरा-पूरा मिलेगा, कई उलझनें सुलझ जावेंगी, कठिनाइयां दूर होने लगेंगी और आप देखेंगे कि हालात भी पहले से काफी सुधरेगा।



कर्क : इन दिनों व्यापार में काफी उतार-चढ़ाव होने पर भी लाभ अच्छा होगा और कुछ सुधार भी अवश्य होगा, वैसे कुछेक परेशानियाँ अभी बराबर चलेंगी, खर्चा कुछ बढ़ेगा।



सिंह : जो परिवर्तन विगत दो तीन मासों में हुए हैं उनका प्रभाव अभी काफी देर तक रहेगा, विशेष काम अधूरा ही रहेगा, खर्चा अधिक एवं व्यर्थ की योजनाओं पर होता रहेगा।



कन्या : माह अक्तूबर आपके लिए परिवर्तन एवं सुधारों की सूचना देता है, शुभफलों में वृद्धि होगी, घरेलू योजनाओं पर व्यय अधिक होगा, सफलता की आशा बढ़ेगी, परिवार से सुख मिलेगा।



तुला : सप्ताह विशेष अच्छा तो नहीं फिर भी माह अक्तूबर आपके लिए ..भप्रद अवश्य ही कहा जा सकता है, कुछेक पुरानी या नई समस्याएं इस सप्ताह के दौरान जन्म लेंगी, आमदनी अच्छी होगी।



वृश्चिक : शुभअशुभ मिश्रितफलों से युक्त सप्ताह कहा जा सकता है, सरकारी कामों में सफलता तो मिलेगी परन्तु राजवर्ग से व्यर्थ का भय या परेशानी भी रहेगी, कामकाज की व्यस्तता में दिन व्यतीत होंगे।



धनु : भय, परेशानी एवं उलझनें जो विगत समय से आपकी उन्नति में बाधा बनकर खड़ी हुई थीं अब धीरे-धीरे दूर होती जावेंगी, भाग्य साथ देगा और आप वातावरण में सुधार महसूस करेंगे।



मकर : अक्तूबर १७ से समय अच्छा शुरू होगा और लाभ में रुकावटें जो बिना कारण ही पड़ी हुई हैं दूर होने लगेंगी, नई योजनाओं से लाभ होगा, वैसे यह सप्ताह भी अच्छा ही है।



कुम्भ : परिश्रम करने पर लाभ अच्छा मिलेगा, प्रयास भी सफल रहेगा, व्यापारिक क्षेत्र एवं आर्थिक क्षेत्र में आप विशेष उन्नति महसूस करेंगे, परन्तु खर्चे अभी कम न होंगे, महान कामों में सफलता मिलेगी।



मीन : स्त्री वर्ग से कुछ परेशानी या कलेश, सावधानी से रहें झगड़ा हो सकता है, वैसे यह सप्ताह आर्थिक दृष्टिकोण से अच्छा रहेगा, आय आशा अनुसार ही होगी, परिवार से सुख व सहयोग मिलेगा।

तमन्ना

एक नवोदित अभिनेत्री

नवोदित अभिनेत्री तमन्ना दिल्ली की रहने वाली हैं। बचपन से ही इन्हें ड्रामे व नाटकों में कार्य करने की रुचि रही है। फिल्म उद्योग में प्रवेश के लिए उन्हें बेहद मेहनत करनी पड़ी। अपनी पढ़ाई समाप्त करने के बाद इन्होंने पक्का निश्चय कर लिया कि यह फिल्म अभिनेत्री बनकर रहेंगी। काफी दौड़-धूप के बाद इन्हें एक फिल्म में छोटा-सा रोल मिला। वह फिल्म



थी 'यही है जिन्दगी'। लेकिन इनका छोटा सा रोल दर्शकों द्वारा बेहद सराहनीय रहा। मतवाली आंखों वाली इस सुन्दर अभिनेत्री को देखकर दर्शकों का मन प्रफुल्लित हो उठा।

फिल्म उद्योग का यह आम असूल है यदि किसी अभिनेत्री या अभिनेता की एक फिल्म चल जाये तो वह नया चेहरा भी निर्माताओं के दिमाग में चढ़ जाता है और यदि खुदा ना खास्ता पहली ही फिल्म में नया कलाकार पिट जाये तो उसे जीवन भर उठने का मौका नहीं मिल पाता, जीनत अमान जैसी अभिनेत्री भाग्यवान हैं जिन्होंने यह धारणा बदल दी वरना अधिकतर कलाकार उठ नहीं पाता।

यही हाल आज अभिनेत्री तमन्ना का है। पहली फिल्म इनकी सफल रही है यानि अब इनके पास भी फिल्म कान्ट्रेक्ट की लम्बी लिस्ट होगी। और आने वाले कल की यह भी व्यस्त अभिनेत्री कहलायेंगी। इनकी आने वाली प्रमुख फिल्में हैं 'नमाज' व 'आग के फूल'।

प्रसिद्ध अभिनेता धर्मेन्द्र की यह बचपन से ही फैन हैं। दीवाना की यह नियमित पाठिका तब से हैं जब यह फिल्म अभिनेत्री नहीं बनी थीं। इनका सबसे बड़ा शौक है अपने प्रशंसकों (फैनज) को प्रसन्न रखना। बैडमिन्टन खेलने के अलावा यह योगाभ्यास में भी रुचि रखती हैं।

विजय भारद्वाज


तमन्ना
छाया: जगमोहन
दीवाना

Regd. No D (D) - 275

रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

१५ वर्ष से कम आयु के विजेता



प्रथम पुरस्कार - 15 रु०
राजिन्द्र सिंह - लुधियाना



द्वितीय पुरस्कार - 10 रु०
सन्तोष कुमार बंका - कलकत्ता



तृतीय पुरस्कार - 5 रु०
आकाशदीप भाटिया - चांदपुर

१५ वर्ष से ऊपर की आयु के विजेता



प्रथम पुरस्कार - 15 रु०
अतुल मेहरोत्रा - इलाहाबाद



द्वितीय पुरस्कार - 10 रु०
राजेश कुमार शर्मा - फिरोजपुर



तृतीय पुरस्कार - 5 रु०
अरविन्द वाचस्पति - दिल्ली

BLACK